पाठ से आगे

69KP25

1. कवि देवत्व और अमरत्व के स्थान पर मनुजत्व को स्वीकारने की बात क्यों करता है ?
2. कविताएँ सभी जातियों और धर्म में प्यार और सद्भाव का संदेश देती हैं, परन्तु हमारे समाज में ऐसा देखने को क्यों नहीं मिलता? साथियों से बात कर अपनी समझ को लिखिए।
3. कवि के मनोभावों को सार्थक करते हुए अगर हर व्यक्ति संसार को अपना घर मानने लगें तो हम जिस समाज में रहते हैं उस समाज की दशा/स्थिति कैसी होगी? चर्चा कर लिखिए।
4. कवि बनावटी दुनिया को छोड़कर वास्तविक जीवन में मिल–जुलकर रहने पर जोर दे रहा है। यहाँ बनावटी दुनिया और वास्तविक जीवन से आप क्या समझते हैं लिखिए।
5. आप विचार कर लिखिए कि मनुष्य–मनुष्य के बीच नफरत की दीवारों को कौन खड़ा करता है, और इस संदर्भ में हमारी क्या भूमिका होनी चाहिए?

भाषा से

69UK3S

1. पाठ में आए हुए निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से देखिए –

   मैं, जंग, बाँट, जंजीर, हँसना, बँधा, ऊँची, मंदिर, संसार, इंसान, कहानियाँ ये शब्द अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु के प्रयोग के कारण अनुनासिक कहे जाते हैं। अनुनासिक स्वर ध्वनि मुख के साथ–साथ नासिका द्वार से निकलती है अतः अनुनासिक को प्रकट करने के लिए शिरोरेखा के ऊपर बिंदु या चंद्र बिंदु का प्रयोग करते हैं। (शब्द या वर्ण के ऊपर लगाई जाने वाली रेखा को शिरोरेखा कहते हैं)।

   बिंदु या चंद्रबिंदु को हिंदी में क्रमशः अनुस्वार और अनुनासिक/चंद्रबिन्दु कहा जाता है।

   अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर–

- अनुनासिक स्वर है जबकि अनुस्वार मूलतः व्यंजन।
- अनुनासिक (चंद्रबिंदु) को परिवर्तित नहीं किया जा सकता जबकि अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है।

- अनुनासिक का प्रयोग केवल उन शब्दों में ही किया जा सकता है जिनकी मात्राएँ शिरोरेखा से ऊपर न लगीं हों. जैसे अ , आ , उ ऊ उदाहरण के रूप में हँस, चाँद, पूँछ।
- शिरोरेखा से ऊपर लगी मात्राओं वाले शब्दों में अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार अर्थात बिंदु का प्रयोग ही होता है. जैसे – गोंद , कोंपल , जबकि अनुस्वार हर तरह की मात्राओं वाले शब्दों पर लगाया जा सकता है.

  हम यहाँ जानने का प्रयास करते हैं कि जब अनुस्वार को व्यंजन मानते हैं तो इसे वर्ण में किन नियमों के अंतर्गत परिवर्तित किया जाता है.। जैसे कंबल, झंडा, धंधा को कम्बल, झण्डा, धन्धा के रूप में उस वर्ग के पंचम अक्षर के साथ लिखा जा सकता है, अर्थात् धंधा शब्द का अनुस्वार हटाना है तो अनुस्वार के बाद वाले वर्ण के पंचम अक्षर का प्रयोग करते हैं।

  जैसे– कंबल शब्द के अनुस्वार को वर्ण में बदलना है तो अनुस्वार के बाद 'ब' वर्ण के पंचम अक्षर 'म' का प्रयोग कर अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है। जैसे– कम्बल।

2. "कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है" यहाँ पर संसार शब्द के पर्याय के रूप में जग, विश्व, जगत, लोक, दुनियाँ, भव, आदि हैं। और हर शब्द की महत्ता वाक्य, विषय और काल के अनुसार विशिष्ट होती है। जैसे–
   - **दुनियाँ** में तरह–तरह के लोग होते हैं।
   - ताजमहल **विश्व** की प्रसिद्ध इमारत है।

     इसी प्रकार से जल, पक्षी, सूर्य, सोना, धरती, शब्द के दो–दो पर्यायवाची खोजकर सटीक वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. धार्मिक सद्भाव से संबंधित स्लोगन साथियों के साथ मिलकर लिखिए।
2. देश–प्रेम, मानवीय मूल्य से ओत–प्रोत कविताएँ खोजकर पढ़िए, चर्चा कीजिए।

6A4G5F

पाठ 12

प्रेरणा स्रोत :- मेरी माँ

– संकलित

'मिसाइलमैन' के नाम से चर्चित पीपल्स प्रेसिडेंट डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक ऐसे चमत्कारिक व्यक्तित्व रहे हैं जिन्होंने अपने कार्य और व्यवहार से देश ही नहीं, दुनियाँ के करोड़ों नवयुवाओं को प्रभावित किए हैं। ऐसे व्यक्तित्व की प्रेरणा स्रोत उनकी ममतामयी माँ आशियम्मा रहीं, जिन्होंने अभाव से भरे दिनों में कलाम को अपने हिस्से का सबकुछ बचा कर उसे संजोते हुए अतिरिक्त स्नेह, लाड़ प्यार के साथ देती रहीं। यही वह स्नेह का मूल भाव था, जो बाद में कलाम के व्यक्तित्व का स्रोत बन कर राष्ट्र के प्रत्येक बच्चों पर न्यौछावर होता रहा और उन्हें एक श्रेष्ठ भारतीय नागरिक बनाने की दिशा में आधार भूमि बन सका।

आज के इस युग में ऐसे लोग कम ही हैं जिन्होंने अपने काम और व्यवहार से करोड़ों युवाओं और सम्पूर्ण देशवासियों को प्रभावित किया हो, उनके दिल में एक खास जगह बनाई हो, 'मिसाइलमैन' नाम से चर्चित, चमत्कारिक प्रतिभा के धनी डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम उन चुनिंदा हस्तियों में से एक हैं। इनका व्यक्तित्व इतना सरल और सहज रहा कि हर कोई उन्हें देखकर हैरान हो जाता उन्होंने अपने काम के सिवाय कभी भी अपने पद को अहम नहीं समझा अपनी सीधी सादी बातों और जीवन मूल्यों के कारण डॉ.कलाम ने दुनिया के चर्चित लोगों में एक अलग ही जगह बनाई इसलिए वह आज 'पीपल्स प्रेसिडेंट' के नाम से भी जाने जाते हैं। वे देश के ऐसे तीसरे राष्ट्रपति हैं, जिन्हें राष्ट्रपति बनने से पूर्व देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' से सम्मानित किया गया। ऐसे दो अन्य पूर्व राष्ट्रपति हैं : सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन और डॉ. जाकिर हुसैन।

ऐसे महान व्यक्तित्व की प्रेरणा–स्रोत डॉ. कलाम की माँ आशियम्मा थीं। मन को छूने वाली अनेक घटनाओं में डॉ. कलाम ने अपनी माँ का बार–बार उल्लेख किया है। बचपन के अभाव भरे दिनों में, एक संयुक्त परिवार के सदस्य के रूप में उन्हें माँ का अधिक लाड़–प्यार, स्नेह और प्रोत्साहन मिला। उन्होंने बताया है कि हमारे घरों में बिजली नहीं थी तब मिट्टीतेल की चिमनी जलाया करते थे या घर में लालटेन से रोशनी होती थी, जिनका समय रात्रि 7 से 9 बजे तक नियत था। पर नन्हें कलाम माँ के अतिरिक्त स्नेह के कारण रात्रि 11 बजे तक दीपक का उपयोग करते थे क्योंकि माँ को कलाम की प्रतिभा पर भरोसा था इसलिए वह कलाम की पढ़ाई के लिए एक स्पेशल लैंप देती थीं जो रात तक पढ़ाई करने में कलाम की मदद करता था। रोशनी को दूसरों तक फैलाने की चाह कलाम के नन्हें मन में यहीं से उठने लगी थी जो समय के साथ विश्वव्यापी बनी।

एक अन्य घटना डॉ. कलाम को जीवनभर याद रही वह यह थी–कलाम की लगन और मेहनत के कारण उनकी माँ खाने–पीने के मामले में उनका विशेष ध्यान रखती थीं। दक्षिण में चावल की पैदावार अधिक होने के कारण वहाँ चावल अधिक खाया जाता है। लेकिन कलाम को रोटियों से विशेष लगाव था इसलिए उनकी माँ उन्हें प्रतिदिन खाने में दो रोटियाँ अवश्य दिया करती थीं। एक बार उनके घर में खाने में गिनी चुनीं रोटियाँ ही थीं। यह देखकर माँ ने अपने हिस्से की रोटी कलाम को दे दी। उनके बड़े भाई ने कलाम को धीरे से यह बात बता दी। इससे कलाम अभिभूत हो उठे और दौड़ कर माँ से लिपट गए।

माँ के विश्वास व प्रोत्साहन का ही परिणाम था कि डॉ. कलाम अपने जीवन को बहुत अनुशासन में जीना पसंद करते थे। वे शाकाहार और ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों में से थे। कहा जाता है कि वे कुरान और भगवद्गीता दोनों का अध्ययन करते थे और उनकी गूढ़ बातों पर अमल किया करते थे। उनके संदेश व छात्रों से बातचीत में उनके जीवन के इन भावों और माँ की प्रेरणा का बार–बार उल्लेख मिलता है, जो भारत के तमाम बच्चों और बच्चियों तथा युवाओं को कुछ नया सोचने और नया करने को प्रोत्साहित और प्रेरित करते रहे हैं।

जब डॉ. कलाम आगे की पढ़ाई के लिए बाहर गए तो उन्हें घर छोड़ना पड़ा, उस समय माँ आशियम्मा का कलेजा भर आया, वे रो पड़ीं और अपने आपको शांत नहीं कर पाईं। तब नन्हें कलाम ने माँ के पास बैठकर उन्हें समझाया–'माँ मैं तुमसे दूर कहाँ जा रहा हूँ। मैं अपनी माँ के बिना भला रह सकता हूँ! नन्हें कलाम के मुँह से ऐसी समझदारी की बात सुनकर माँ ने अपने आँसू पोंछ लिए। वे मुस्कुराईं और फिर हँसी–खुशी उन्हें विदा करने के लिए, कुछ हिदायतें देती हुईं, कुछ कदम कलाम के साथ चलीं। इसके बाद कलाम के पिता और परिवार के अन्य लोग, मित्र स्टेशन पर उन्हें छोड़ने आए थे। रेलगाड़ी में बैठकर स्कूल की ओर यात्रा करते हुए कलाम के मन में माँ की ममता थी, यादें थीं, माँ की हिदायतें, झिड़कियाँ, और शरारत करने पर की गईं सख्तियाँ थीं। कलाम का मन माँ की ममता से सराबोर था।

कोई भी बच्चा जब पहली बार घर छोड़कर बाहर अकेला रहने के लिए जाता है तो उसे सबसे ज्यादा घर से दूरी और माँ की कमी खलती है। माँ से बच्चे के मन का तार जुड़ा होता है, नन्हें बालक कलाम का माँ के प्रति यही भाव उनके बड़े होने के साथ–साथ और भी गहरा होता गया। यही भाव उनकी "माँ" कविता में दिखता है–

माँ

"समंदर की लहरें,
सुनहरी रेत,
श्रद्धानत तीर्थयात्री,
रामेश्वरम् द्वीप की वह छोटी–पूरी दुनिया।
सब में तू निहित है,
सब तुझमें समाहित।
तेरी बाँहों में पला मैं,
मेरी कायनात रही तू,
जब छिड़ा विश्वयुद्ध, छोटा–सा मैं,
जीवन बना था चुनौती, जिन्दगी अमानत,
मीलों चलते थे हम,
पहुँचते किरणों से पहले"

यह कविता उन्होंने तब लिखी जब उनकी माँ इस दुनियाँ में नहीं रहीं और यह सच जाहिर करती है कि वे कलाम के महान कामों के पीछे प्रेरणा रहीं। कलाम के बचपन को माँ ने कुछ इस तरह सँवारा और प्रोत्साहित किया कि बालमन के सभी सहज भाव डॉ. कलाम की प्रौढ़ अवस्था में छलकते रहते थे। नई चीज़ सीखने के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे। उनके अंदर सीखने की भूख थी और पढ़ाई पर घंटों ध्यान देना उनमें से एक था।

एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने जीवन के सबसे बड़े अफसोस का जिक्र किया था उन्होंने कहा था कि वह अपने माता–पिता को उनके जीवनकाल में 24 घंटे बिजली उपलब्ध नहीं करा सके; उन्होंने कहा था कि मेरे पिता (जैनुलाब्दीन) 103 साल तक जीवित रहे और माँ (आशियाम्मा) 93 साल तक जीवित रहीं। उन्होंने भारतीय छात्रों को अपना संदेश देते हुए कहा था –

"सपने वो नहीं होते जो रात को सोते समय नींद में आएँ, सपने वो होते हैं जो रातों में सोने नहीं देते।"

"इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।"

प्रस्तुत लेख डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम द्वारा लिखित पुस्तक ''विंग्स ऑफ फायर'' के हिंदी रूपान्तरण से संकलित है।

अभ्यास

पाठ से

1. डॉ. कलाम को किन–किन नामों से जाना जाता है?
2. डॉ. कलाम को सर्वाधिक प्रेरणा किससे मिली ?
3. बालक कलाम को पढ़ने के लिए माँ कैसे प्रोत्साहित करती थीं?
4. डॉ. कलाम को कौन सी घटना जीवन भर याद रही ?
5. पढ़ाई के लिए घर से दूर जाते हुए कलाम ने माँ को क्या समझाया ?
6. भारतीय छात्रों को डॉ. कलाम ने क्या संदेश दिया ?
7. डॉ. कलाम के जीवन का सबसे बड़ा अफसोस क्या था ?

पाठ से आगे

1. डॉ. कलाम की प्रेरणा–स्रोत उनकी माँ थीं। हम सब के जीवन में माँ की भूमिका कितनी गौरवपूर्ण है? साथियों से विचार कर लिखिए।
2. डॉ. कलाम के जीवन की सफलता उनके कठोर परिश्रम और लगन का परिणाम रही। क्या हमें लगता है कि हम सफलता के लिए कठोर परिश्रम करते हैं ? यदि हाँ तो उदाहरण सहित अपने अनुभव को लिखिए।
3. आप घर से किसी कार्य वश या किसी संबंधी के यहाँ (बाहर) जाते हैं तो आपको किसकी याद ज्यादा आती है और क्यों ? साथियों से बातचीत कर लिखिए।

4. कल्पना कीजिए आपको आगे की पढ़ाई के लिए दूर कहीं जाना पड़ा तो आपको कैसा लगेगा और आपको क्या–क्या परेशानी होगी ?
5. जीवन की कोई छोटी–छोटी घटनाओं का उल्लेख कीजिए जब आपको माँ की बहुत याद आई हो अथवा माँ को आपने महसूस किया हो।

भाषा से

1. पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों को हिंदी अर्थ वाले शब्दों में बदलिए–

अमानत, अहसास, कायनात, जिक्र, ज्यादा, सख्ती, अफसोस, सराबोर।

2. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

   मुझे फल ही चाहिए।

   मुझे फल भी चाहिए।

   वाक्य में 'ही' के स्थान पर 'भी' लगा देने से वाक्य का अर्थ बदल जाता है। इसी प्रकार के पाँच वाक्य बनाइए।

6AW4AD

3. महान काम, सहज भाव, महान व्यक्तित्व, चर्चित लोग, चुनिंदा हस्तियों– जैसे विशेषण शब्दों का प्रयोग पाठ में हुआ है। पाठ से आप अन्य दस विशेषण युक्त शब्दों को ढूँढ़ कर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. डॉ. कलाम ने राष्ट्र के युवाओं को नई सोच और नए कार्य को करने की प्रेरणा दी। यदि आपको अपने विद्यालय में नया कुछ करने का मौका दिया जाए तो आप क्या कुछ नया करना चाहेंगे? योजना बनाइए।

6M1GPA

2. डॉ. कलाम की वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में शिक्षक से पता कर उनके चित्र के साथ कक्षा–कक्ष में प्रदर्शित कीजिए।

3. नेल्सन मंडेला, आंग सांग सू की और मलाला युसुफजाई के बारे में शिक्षक से चर्चा कर 10–10 पंक्तियाँ लिखिए।

●●●

पाठ 13

सुभाषचंद्र बोस का पत्र

– संकलित

'नेता जी' के नाम से प्रसिद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ओजस्वी सेनानी सुभाषचंद्र बोस ने यह पत्र 'केसरी' पत्रिका के संपादक श्री एन. सी केलकर के नाम बर्मा के मांडले जेल से लिखा। बोस को जब बरहमपुर (बंगाल) जेल से मांडले जेल स्थानांतरित किया गया तो उस जेल में पहुँचने के बाद उनकी स्मृति में यह बात कौंधी कि महान क्रांतिकारी और कांग्रेस (गरम दल) के नेता 'लोकमान्य' बाल गंगा धर तिलक ने अपने कारावास के अधिकांश भाग बेहद हतोत्साहित कर देने वाले इसी परिवेश में व्यतीत किए थे। कारावास के छह वर्ष लोकमान्य ने अत्यंत शारीरिक और मानसिक यंत्रणा में बिताए फिर भी उस त्रासद स्थिति में 'गीता भाष्य' जैसी ग्रन्थ की रचना की। मांडले जेल–जीवन के बारे में बोस के शब्द हैं "मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि मांडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगीं। अन्य जेलों की तरह यह भी एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत के एक माहन सपूत लगातार छह वर्ष तक रहे।"

प्रिय श्री केलकर,

मैं पिछले कुछ महीनों से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था जिसका कारण केवल यह रहा है कि आप तक ऐसी जानकारी पहुँचा दूँ जिसमें आपको दिलचस्पी होगी। मैं नहीं जानता कि आपको मालूम है या नहीं कि मैं यहाँ गत जनवरी से कारावास में हूँ। जब बरहमपुर जेल (बंगाल) से मुझे माँडले जेल के लिए स्थानांतरण का आदेश मिला था, तब मुझे यह स्मरण नहीं आया था कि लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास काल का अधिकांश भाग माँडले जेल में ही गुजारा था। इस चहारदीवारी में, यहाँ के बहुत ही हतोत्साहित कर देनेवाले परिवेश में, स्वर्गीय लोकमान्य ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीता भाष्य' ग्रंथ का प्रणयन किया था जिसने मेरी नम्र राय में उन्हें 'शंकर' और 'रामानुज' जैसे प्रकांड भाष्यकारों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।

जेल के जिस वार्ड में लोकमान्य रहते थे वह आज तक सुरक्षित है, यद्यपि उसमें फेरबदल किया गया है और उसे बड़ा बनाया गया है। हमारे अपने जेल के वार्ड की तरह, वह लकड़ी के तख्तों से बना है, जिसमें गर्मी में लू और धूप से, वर्षा में पानी से, शीत ऋतु में सर्दी से तथा सभी ऋतुओं में धूलभरी हवाओं

से बचाव नहीं हो पाता। मेरे यहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण बाद, मुझे उस वार्ड का परिचय दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया था लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि माँडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगी। अन्य जेलों की तरह यह भी एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्ष तक रहा था।

हम जानते हैं कि लोकमान्य ने कारावास में छह वर्ष बिताए। लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि उस अवधि में उन्हें किस हद तक शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से गुजरना पड़ा था। वे यहाँ एकदम अकेले रहे और उन्हें कोई बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से मिलने–जुलने नहीं दिया जाता था।

उनको सांत्वना देनेवाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकदम एकाकी रहते थे। यहाँ रहते हुए उन्हें दो या तीन भेंटों से अधिक का मौका नहीं दिया गया और ये भेंटें भी पुलिस और जेल अधिकारियों की उपस्थिति में हुई होंगी, जिससे वे कभी भी खुलकर और हार्दिकता से बात नहीं कर पाए होंगे।

उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुँचने दिया जाता था। उनकी जैसी प्रतिष्ठा और स्थितिवाले नेता को बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर देना, एक तरह की यंत्रणा ही है और इस यंत्रणा को जिसने भुगता है, वही जान सकता है। इसके अलावा उनके कारावास की अधिकांश अवधि में देश का राजनैतिक जीवन मंद गति से खिसक रहा था और इस विचार ने उन्हें कोई संतोष नहीं दिया होगा कि जिस उद्देश्य को उन्होंने अपनाया था, वह उनकी अनुपस्थिति में किस गति से आगे बढ़ रहा है।

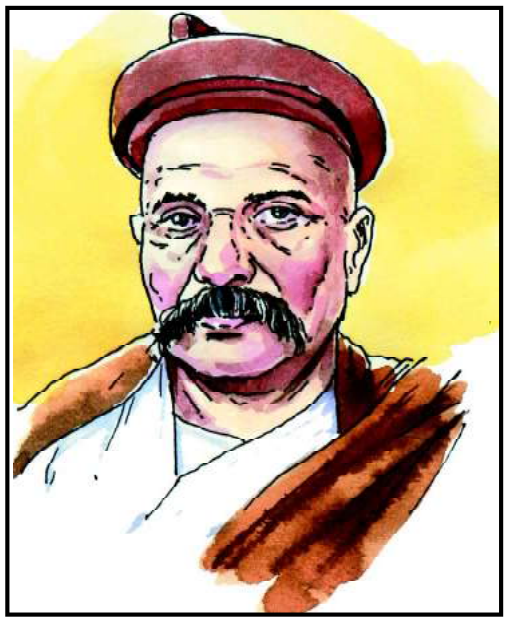

उनकी शारीरिक यंत्रणा के बारे में जितना ही कम कहा जाए, बेहतर होगा। वे दंड–संहिता के अंतर्गत बंदी थे और इस प्रकार आज के राजबंदियों की अपेक्षा कुछ मायनों में उनकी दिनचर्या कहीं अधिक कठोर रही होगी। इसके अलावा उन्हें मधुमेह की बीमारी थी। जब लोकमान्य यहाँ थे, माँडले का मौसम तब भी प्रायः ऐसा रहा होगा जैसा वह आजकल है और अगर आज नौजवानों को शिकायत है कि वहाँ की जलवायु शिथिल कर देनेवाली और मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देनेवाली है और धीरे–धीरे, वह व्यक्ति की जीवन–शक्ति को सोख लेती है, तो लोकमान्य ने, जो वयोवृद्ध थे, कितना कष्ट झेला होगा?

लेकिन इस कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं, इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता होता है, उन अनेक छोटी–छोटी बातों का, जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की सी चुभन बन जाती हैं और जीवन को दूभर बना देती हैं।

वे गीता की भावना में मग्न रहते थे और शायद इसलिए दुख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उन यंत्रणाओं के बारे में किसी से कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

समय–समय पर मैं इस सोच में डूबता रहा हूँ कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह लंबे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था। हर बार मैंने अपने आपसे पूछा, ''अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है तो महान लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी, जिसके विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं रहा होगा।'' यह विश्व भगवान् की कृति है, लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वे जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के ह्रास के बिना, बंदी जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है। केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक ही उस यंत्रणा और दासता के बीच मानसिक संतुलन बनाए रख सकता था और 'गीता भाष्य' जैसे विशाल एवं युग–निर्माणकारी ग्रंथ का प्रणयन कर सकता था।

मैं जितना ही इस विषय पर चिंतन करता हूँ उतना ही ज्यादा मैं उनके प्रति आदर और श्रद्धा में डूब जाता हूँ। आशा करता हूँ कि मेरे देशवासी लोकमान्य की महत्ता को आँकते हुए इन सभी तथ्यों को भी दृष्टिपथ में रखेंगे। जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद इतने सुदीर्घ कारावास को झेलता गया और जिसने उन अंधकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए।

लेकिन लोकमान्य ने प्रकृति के जिन अटल नियमों से अपने बंदी जीवन के दौरान टक्कर ली थी, उनको अपना बदला लेना ही था। अगर मैं कहूँ तो मेरा विश्वास है कि लोकमान्य ने जब माँडले को अंतिम नमस्कार किया था तो उनके जीवन के दिन गिने–चुने ही रह गए थे। निस्संदेह यह एक गंभीर दुख का विषय है कि हम अपने महानतम पुरुषों को इस प्रकार खोते रहे, लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि क्या वह दुर्भाग्य किसी–न–किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता था।

आदरपूर्वक।

आपका स्नेहभाजन,

सुभाषचंद्र बोस

टिप्पणी

एन.सी.केलकर – तत्कालीन विदर्भ के काँग्रेस के वरिष्ठ नेता। बाद में 'स्वराज्य दल' में सम्मिलित हो गए थे। लोकमान्य तिलक के निधन के पश्चात् 'केसरी' पत्रिका का सम्पादन श्री केलकर ने ही सँभाला था।

शंकर व रामानुज – शंकराचार्य और रामानुज भारत के प्रसिद्ध दार्शनिक थे। इन्होंने अपने–अपने ग्रंथों में ब्रह्म, जगत्, जीव आदि दार्शनिक तत्वों पर अपने–अपने विचार प्रकट किए हैं और वेदों का भाष्य लिखा है।

अभ्यास

पाठ से

1. नेता जी ने केलकर को पत्र क्यों लिखा ?
2. लोकमान्य ने अपने जीवन का छह वर्ष कहाँ और क्यों गुजारा ?
3. सुभाषचंद्र बोस ने भगवान को धन्यवाद क्यों दिया ?
4. सुभाषचंद्र बोस ने जेलों को तीर्थस्थल क्यों कहा है ?
5. लोकमान्य को कारावास में सांत्वना देनेवाली वस्तु क्या थी ?
6. लोकमान्य दुःख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। कैसे ?
7. सुभाषचन्द्र बोस जी ने किस पुस्तक की रचना की और उसका विषय क्या है ?
8. नेता जी के अनुसार आजकल के नौजवान को वहाँ के जलवायु से क्या शिकायत है ?

पाठ से आगे

1. पाठ में लिखा है कि उनको सांत्वना देनेवाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकाकी रहते थे। एकाकीपन में पुस्तक कैसे सांत्वना देते हैं और एकाकीपन को कैसे दूर करते हैं। आपस में बातचीत कर पुस्तक के उपयोग पर अपनी समझ लिखिए।
2. कारावास अथवा जेल जीवन हमारे घर के जीवन अथवा आम जन जीवन से कैसे अलग है? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
3. कल्पना कर लिखिए कि जब नौजवानों को उस जलवायु से इतनी शिकायत थी तो मधुमेह से ग्रस्त वृद्ध लोकमान्य को कितना कष्ट झेलना पड़ा होगा।
4. लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह वर्ष उन कठिन परिस्थितियों में क्यों बिताने पड़े? साथियों और शिक्षकों से चर्चा कर लिखिए।
5. नेता जी का मानना है कि सुदीर्घ कारावास के अंधकारमय दिनों में भी अपनी मातृभूमि के लिए अमूल्य भेंट तैयार की इसलिए उन्हें विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम स्थान मिलना चाहिए। प्रथम श्रेणी का यहाँ क्या अर्थ है? साथियों से बातचीत कर लिखिए।

भाषा से

1. देशवासी अर्थात देश में रहनेवाले, । कारावास–कारा में वास, । राजनीति– राजा की नीति इसी प्रकार के पाठ में बहुत सारे सामासिक पदों का प्रयोग हुआ है। उनका विग्रह कर समास का नाम लिखिए।

राजबंदी, तीर्थस्थल, बहुमूल्य, लोकमान्य, महापुरुष, स्थानान्तरण, चहारदीवारी, एकाग्रचित, घटनाचक्र

2. निम्नलिखित अवतरण में कुछ विराम चिह्न छूट गए हैं उनका यथास्थान प्रयोग कीजिए–

लेकिन कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता है उन अनेक छोटी–छोटी बातों का जो किसी बंदी के जीवन में सुइयों की सी चुभन बन जाती है और जीवन को दूभर बना देती है। वे गीता की भावना में मग्न रहते थे। और शायद इसलिए दुःख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने यंत्रणाओं के बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहा।

3. पाठ में दिए गए इस वाक्य को ध्यान से पढ़िए–

'वहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्षों तक रहा' यहाँ पर महानतम शब्द गुणवाचक विशेषण का तुलनाबोधक रूप है। मूल शब्द महान है उत्तर अवस्था महानतर उत्तमावस्था महानतम है, जैसे अधिक–अधिकतर–अधिकतम , सुंदर–सुंदरतर–सुंदरतम

इसी प्रकार के पाँच विशेषण के शब्दों में तर, तम जोड़कर उनके रूप लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. गीता भाष्य क्या है ? इसके संबंध में अपने शिक्षकों से पूछकर इसके ऊपर अपनी समझ को लिखिए और कक्षा में सुनाइए।
2. जेल जीवन के अनुभव और कठिनाइयों के बारे में अनेक महापुरुषों जैसे गाँधी, नेहरु, जयप्रकाश ने पत्र लिखे हैं। उन्हें खोजकर पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

●●●

पाठ 14

भारत बन जाही नंदनवन

–कोदूराम 'दलित'

अपन देश ल नंदनवन जइसन सुघ्घर बनाय म उहाँ के लोगन मन के ज्ञान अऊ मेहनत ह आधार होथे। असली ताकत मेहनत करइया किसान अऊ मजदूर होथे। जब तक आलस ल नई छोड़ही तब तक उहाँ रहइया मन आगू नई बढ़ सकय। जनता के दुःख–पीरा हरे मा खुद के मेहनत अऊ विश्वास होथे। किसान अऊ मजदूर चाहय त खंडहर ह तको रंगमहल के समान बन जाही।

कविता म कवि ह देश के जवान मन ले, मजदूर अऊ किसान मन ले आलस छोड़ के मेहनत के बात कहे हे।

हे नव भारत के तरुण वीर,
हे भीम, भागीरथ, महावीर ।

झन भुला अपन पुरुसारथ बल,
खँड़हर मा रच अब रंगमहल ।

ये राज तोरे, सरकार तोर,
ये दिल्ली के दरबार तोर ।

हे स्वतंत्र भारत के नरेस,
जन–जन के जल्दी हर कलेस ।

माँगे स्वदेश श्रमदान तोर,
संपदा, ज्ञान–विधान तोर ।

जब तोर पसीना पा जाही,
ये पुरुस–भूमि हरिया जाही।

पाही जब तोर बटोरे धन,
भारत बन जाही नंदनवन।

पाही बन तोर विसुद्ध ज्ञान,
भारत बनही जग मा महान।

तज दे आलस, कर श्रम कठोर,
पिछवा जाबे अब झन अगोर ।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ			अन्य शब्दार्थ		
झन	=	मत,नहीं	नवभारत	=	नया भारत
पुरुसारथ	=	पुरुषार्थ, पराक्रम	तरुण	=	युवा,जवान
कलेस	=	कष्ट	रंगमहल	=	आमोद–प्रमोद के लिए बनाया गया महल
पिछवा जाबे	=	पिछड़ जाओगे			
अगोरमा	=	प्रतीक्षा करना	स्वदेश	=	अपना देश
नरेस	=	नरेश या राजा	नंदनवन	=	स्वर्ग में देवराज इंद्र की वाटिका

अभ्यास

पाठ से

1. कवि ह भीम, भगीरथ, अउ महावीर कोन ल केहे हे ?
2. कवि देश के नवजवान मन ले का माँगत हे ?
3. ''खंडहर मा रच अब रंग महल'' के भाव ल समझावव।
4. कवि ह नवजवान मन ले कड़ा मिहनत करे बर काबर कहत हे ?
5. भारत नंदनवन कब बन जाहि ?
6. खाल्हे लिखाय कविता के पंक्ति मन के अर्थ लिखव–

   क. झन भुला अपन पुरुसारथ बल

   खंडहर मा रच अब रंगमहल।

   ख. हे स्वतंत्र भारत के नरेस

   जन–जन के जल्दी हर कलेस

पाठ से आगे

1. तुमन ल अपन जीवन म कभू भीम. भगीरथ, महावीर के पात्र के किरदार निभाय के मौका मिलही त तीनों में से काकर किरदार निभाना पसंद करहु अउ काबर ? सोचके लिखव।
2. जउन घर के मुखिया आलसी होथे वो घर परिवार के लोगन म ओकर का–का परभाव पड़थे। अपन घर के मन ला पूछ के लिखव।

3. तुमन ल कभू जीवन म एक दिन बर अपन राज्य के मुख्यमंत्री बना दिए जाही त अपन राज्य के विकास वर का–का काम करहू ? अपन साथी मन संग चर्चा करके विकास बर करे काम के सूची बनावव।

6NKRZ6

4. देश के नौजवान मन ले कवि बहुत उम्मीद करत हे। नौजवान मन का–का कर सकत हे ? अपन साथी मन संग चर्चा करके विकास काम के सूची बनावव।

भाषा से

6NUN1T

1. ये शब्द मन के हिंदी रूप लिखव –

   पुरुसारथ, अगोर, कलेस, झन, पिछवा, पुरुस–भूमि, विसुद्ध।

2. कविता म नरेस–कलेस, ज्ञान–महान, जइसन तुक–ले तुक मिले शब्द आय है। अइसन शब्द मन ल समानोच्चरित शब्द कहिथे।

   खाल्हे लिखाय शब्द मन के दो–दो समानोच्चरित शब्द लिखव–

   स्वदेश, वीर, तोर, विशुद्ध, महल

3. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव

   गुन, आगू, कठोर, खंडहर, नरेस, विशुद्ध।

योग्यता विस्तार

6P4J3G

1. भारत ल अउ का–का नाम ले जाने जाथे वोकर सूची बनावव।
2. पहिली के भारत अउ वर्तमान भारत म कोन–कोन से अंतर मालूम होथे शिक्षक के सहायता से चर्चा करके लिखव।

●●●

पाठ 15

शतरंज में मात

—डॉ. श्री प्रसाद

लोक अनुश्रुतियों और इतिहास के पन्नों में बीरबल, गोनू झा, मुल्ला दो प्याजा, गोपाल भांड आदि अनेक ऐसे व्यक्तित्व का उल्लेख मिलता है जो अपनी बुद्धि चातुर्य और वाक्—पटुता या हाजिर जवाबी के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। उन्हीं में एक प्रसिद्ध चरित्र तेनाली राम का है, जो विजय नगर राज के राजा कृष्णदेव राय के दरबारी थे। इनके जीवन—योगदान के प्रायः दो स्वरूप देखने को मिलते हैं। एक तो न्याय व्यवस्था में, कि गुनाहगार को ही सजा मिले और निर्दोष के साथ न्याय हो सके और दूसरे दरबार में उनसे जलन रखने वाले अथवा उनके खिलाफ षड्यंत्र रचने वाले लोगों का पर्दाफाश किया जा सके जिससे राजा को वास्तविकता का एहसास कराया जा सके। कुछ ऐसा ही दृश्य प्रस्तुत एकांकी पढ़ते हुए हम देख और महसूस कर सकते हैं।

पात्र —

राजा कृष्णदेव राय	तेनालीराम
नाई	दरबारी
सेवक	दर्शकगण

पहला दृश्य

(राजा का दरबार। दरबारी अपने—अपने आसन पर बैठे हैं। राजा और तेनालीराम के आसन अभी खाली हैं।)

पहला दरबारी — देखा, अभी तक नहीं आए तेनालीराम।

दूसरा दरबारी — भला क्यों आएँगे? जब स्वयं महाराज उनकी मुट्ठी में हैं तो वे हम जैसों को क्यों पूछेंगे?

तीसरा दरबारी — महाराज ने भी खूब सिर चढ़ाया है तेनाली को!

चौथा दरबारी — (राजा की नकल करता है) ''हाँ तेनाली! वाह तेनाली! क्या पते की बात कही तेनाली ने...।'' तेनाली, तेनाली, तेनाली! कान पक गए हैं प्रशंसा सुनते—सुनते।

पहला दरबारी — महाराज के सिर से तेनाली का भूत उतारना होगा।

दूसरा दरबारी — कितनी बार प्रयत्न किया। तेनाली की चतुराई के आगे हमारी एक नही चली!

चौथा दरबारी — कुछ युक्ति निकाली जाए!

पहला दरबारी – (चुटकी बजाते हुए) निकाल लिया मैंने उपाय! सुनो! (सब उसे घेर लेते हैं। आपस में खुसुर–फुसुर होती है। सब खुश नज़र आते हैं। तभी नगाड़े बजने लगते हैं।)

एक सेवक – सावधान! महाराजाधिराज कृष्णदेव राय पधार रहे हैं।

(दरबारीगण अपने–अपने आसन की ओर भागते हैं। चेहरों पर गंभीरता का भाव लाकर राजा का स्वागत करते हैं।)

राजा – (बैठते ही) तेनालीराम कहाँ हैं?

पहला दरबारी – (अन्य दरबारियों को देखते हुए) लो आते ही आ गई याद! (राजा से) अभी नहीं आए। लगता है शतरंज का खेल जमा है कहीं।

एक दरबारी – कहीं शतरंज खेल रहे होंगे।

राजा – शतरंज। तेनालीराम क्या शतरंज के शौकीन हैं?

दूसरा दरबारी – हाँ महाराज, वे तो गजब के खिलाड़ी हैं।

तीसरा दरबारी – पर महाराज की बराबरी नहीं कर सकते।

चौथा दरबारी – महाराज, आज्ञा हो तो मुकाबला आयोजित किया जाए। एक ओर आप, दूसरी ओर तेनालीराम। तेनाली जी नहला, तो आप भी तो दहला हैं।

राजा – (खुश होकर) क्या उत्तम सुझाव है! बराबर का खिलाड़ी मिले, तभी खेल का आनंद आता है। यह तेनाली भी बड़ा दुष्ट निकला। मुझे बताया क्यों नहीं?

पहला दरबारी – वह आपकी हार नहीं देखना चाहता, महाराज! इसलिए छिपाए रखा। पर वास्तव में बड़ा घाघ है तेनाली। एक–से–एक खिलाड़ियों को मात दे चुका है।

राजा – घाघ है तो हम भी कम नहीं। हो जाएँ दो–दो हाथ!

सेवक – श्री तेनालीराम जी आ रहे हैं!

(तेनालीराम का प्रवेश)

तेनाली – (झुककर) प्रणाम! महाराजाधिराज की जय हो!

(राजा मुँह फेरते हैं; तेनाली चौंकता है।)

तेनाली – इस तुच्छ सेवक का प्रणाम स्वीकार करें, महाराज।

राजा – (क्रोधित होकर) तेनाली, तुमने बताया नहीं कि तुम शतरंज में माहिर हो।

तेनाली – (चकित होकर) शतरंज और मैं! शतरंज के विषय में मैं कुछ नहीं जानता महाराज।

राजा – (क्रोधित होने की मुद्रा में)मुझे सब पता है तेनाली! बात अब छिप नहीं सकती। (दरबारियों से) क्यों?

पहला दरबारी – हाँ, महाराज, बड़े–बड़ों को मात दी है तेनाली ने।

तीसरा दरबारी – ज़रा बच के खेलिएगा, महाराज।

सब दरबारी – (मुँह छिपाकर हँसते हुए) क्या आनंद आ रहा है!

तेनाली – (घबराकर) पर... पर... मुझे वास्तव में शतरंज का ज्ञान नहीं, महाराज... इस अनाड़ी के संग खेलकर आप पछताएँगे।

राजा – कोई बहाना नहीं चलेगा। (सेवक से) जाओ, व्यवस्था करो।

तेनाली – मैं नहीं खेलता शतरंज! (सिर ठोकता है।)

पहला दरबारी – तेनालीजी, क्यों अस्वीकार करते हैं?

दूसरा दरबारी – जब महाराज ने स्वयं न्यौता दिया है!

तीसरा दरबरी – तेनालीजी, दाँव ज़रा सोचकर चलिएगा!

(सभी हँसकर तेनाली के असमंजस का आनंद लूटते हैं। तेनाली उन्हें देखता हुआ कुछ सोचता है।)

तेनाली – (दर्शकों से) समझा! चाल चली है सबने। ठीक है! (पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

(दरबार भवन। बीच में चौकी, उस पर गद्दी। एक ओर तकिए से टिके राजा। सामने मुँह लटकाए तेनाली। बीच में शतरंज की चादर बिछी है। चारों ओर दरबारी और अन्य लोग बैठे हैं।)

दरबारीगण – (दर्शकों से) अब बरसेगा महाराज का क्रोध तेनाली पर!

राजा – (हुक्का हटाकर) हाँ भई तेनाली, खेल आरंभ हो।

तेनाली – (मुँह लटकाए, धीरे–से) महाराज आरंभ करें।

राजा – यह चला मैं पहली चाल। (मोहरा उठाकर रखते हैं।)

चौथा दरबारी – क्या चाल चली महाराज ने! (ताली बजाता है।)

तेनाली – (सोच में) ऐं ... क्या चलूँ?

दूसरा दरबारी – पर हमारे तेनाली भी कुछ कम नहीं।

तेनाली – (एक मोहरा उठाते हुए अपने आपसे) चलो, इसे बढ़ाता हूँ।

राजा – (दर्शकों से) ऐं? सबसे पहले वज़ीर? अवश्य कोई गूढ़ चाल है। सोच–समझ कर चलूँ। (चाल चलते हैं।)

तेनाली – (दर्शकों से) कुछ भी चलें मुझे क्या? (राजा से) लीजिए, यह चला।

राजा – (धीरे–से) यह क्या? चतुराई है या मूर्खता?खैर मैंने यह चला।

तेनाली – अब चला यह घोड़ा।

राजा – अरे, यह तो सरासर मूर्खता है। अवश्य जानबूझकर हार रहा है। (गरजकर) तेनाली! मन से खेलो!

पहला दरबारी – ठीक से खेल जमाओ, तभी महाराज को आनंद आएगा।

दूसरा दरबारी – महाराज को अनाड़ी नहीं, बराबरी का खिलाड़ी चाहिए।

चौथा दरबारी – आप कुशल खिलाड़ी हैं, जानकर मत हारिए।

तेनाली – (मन में) अच्छा तमाशा बन रहा है मेरा।

राजा – (समझाते हुए) ठीक से खेलो! यह मत समझो कि मैं आसानी से हार जाऊँगा।

तेनाली – मैंने सच कहा था महाराज, मुझे खेल का ज्ञान नहीं है।

राजा – (क्रोधित होकर) तो क्या ये सब असत्य बोल रहे है?

सब दरबारी – महाराज, हमने अपनी आँखों से इन्हें बाज़ी–पर–बाज़ी जीतते हुए देखा है।

राजा – सुना? यदि अब भी हारे तो कठोर–से–कठोर दंड दूँगा। (तेनाली चाल चलता है।)

राजा – (गरजकर) फिर अनाड़ी चाल! अपना सही रंग दिखाओ, खेल जमाओ!

तेनाली – जैसी आज्ञा! लीजिए, यह चलता हूँ।

राजा – उड़ गया न तुम्हारा प्यादा! (क्रोधित होकर) फिर जानकर हारे तुम।

पहला दरबारी – महाराज अति चतुर हैं। उनका अपमान किया तो ठीक नहीं होगा, तेनाली।

दूसरा दरबारी – (भड़काते हुए) महाराज का क्रोध भयंकर है, तेनाली।

राजा – अबकी हारे तो भरी सभा में तुम्हारा सिर मुँड़वा दूँगा। (खेल बढ़ाते हुए) यह रही मेरी चाल।

तेनाली – (सिर खुजाते हुए) मैंने इससे दिया उत्तर।

राजा – मारे गए तुम। सँभल जाओ। यह हुई मेरी अगली चाल।

तेनाली – और यह है मेरा दाँव।

राजा – फँसाया न? वज़ीर क्यों चले?

तेनाली – बेगम के बचाव के लिए वज़ीर बढ़ाया।

राजा – और यह कटा तुम्हारा वज़ीर।

तेनाली – अब आए स्वयं राजा।

राजा – गया तुम्हारा राजा। फिर पिट गए।इतनी मूर्खता? मुझे विश्वास नहीं रहा तुम पर तेनाली। (उठ खड़े होते हैं, शतरंज उलट देते हैं, मोहरे उठाकर ज़ोरों से फेंकते हैं।) अच्छा खेल बनाया हमारा। (दरबारियों से) कल दरबार में नाई बुलाना। तेनाली के बाल उतरवाऊँगा; अपमान का बदला लूँगा। (तमतमाया चेहरा लिए पाँव पटकते चल देते हैं।)

पहला दरबारी – (खुशी–खुशी) बन गई न बात।

तेनाली – (मुँह छिपाए) भरी सभा में मुंडन? इससे बढ़कर है कोई अपमान? (पर्दा गिरता है।)

तीसरा दृश्य

(दरबार भवन। बीच में ऊँचा मंच। राजा सिंहासन पर। तेनाली अपने आसन पर। एक सेवक नाई को खींचता हुआ लाता है।)

नाई – (राजा के सामने गिरकर) मैंने कुछ नही किया, महाराज! मैं निर्दोष हूँ।

राजा – उठो, उठो। तुम्हें कोई सज़ा नहीं मिल रही है।

नाई – (खुश होकर) नहीं? फिर...?

राजा – अपना उस्तरा निकालो। मुंडन करना है।

नाई – मुंडन! तब तो इनाम भी अच्छा मिलेगा। फिर मुझे क्या? राज–दरबार में केश उतारूँ या नदी किनारे, सब बराबर। (पेटी खोल तैयारी करता है। तमाशा देखने के उत्सुक दरबारी धीरे–धीरे मंच के निकट आते हैं।)

तेनाली – क्षमा करें, महाराज।

राजा – क्षमा–वमा कुछ नहीं। यह तुम्हें पहले सोचना था, जब मेरा अपमान किया। मंच पर चढ़ो। (तेनाली हॉल के बीच मंच पर चढ़ता है।)

नाई – अरे, इतने महान आदमी का मुंडन!

राजा – डरो मत, नाई! तुम आज्ञा का पालन करो।

नाई – जो आज्ञा, महाराज! (उस्तरा लेकर तेनाली के पास जाता है।)

तेनाली – महाराज, आज्ञा दें तो एक निवेदन करूँ।

दरबारीगण – (आपस में) अवश्य कोई नई चाल है।

राजा – कहो तेनाली!

तेनाली – महाराज! इन बालों पर मैंने पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ उधार ली हैं। जब तक कर्ज़ा न चुका दूँ, केश कटवाने का कोई हक नहीं मुझे।

सब दरबारी– देखी तेनाली की धूर्तता।

राजा– शांत! दंड तो भुगतना पड़ेगा इनको। (सोचकर, एक दरबारी से) जाओ, अभी कोष से पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ निकलवाकर इनके घर भिजवाओ। (नाई से) काम पूरा करो। देखना, एक बाल भी न छूटे।

(दरबारी खुश। नाई फिर उस्तरा उठाता है।)

तेनाली – (रोककर) क्षण भर सधो भैया! (आसन लगाकर मंच पर बैठ जाता है। आँखें मूँद, हाथ जोड़ मंत्रों का उच्चारण करता है।) ओऽम् नमः शिवाय, ओऽम् नमः...

राजा – (बीच में) तेनाली, यह क्या?

दरबारी – (आपस में) एक नया ढोंग। हद है चतुराई की!

तेनाली – (आँखें खोलकर शांति से समझाते हुए) कृपया, बीच में न टोकें। मैं आपकी भलाई के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।

राजा – पहेली मत बुझाओ। नाई, देरी क्यों? उस्तरा उठाओ।

तेनाली – मेरी बात सुनने का कष्ट करें, महाराज!

दरबारी – (अधीर होकर) महाराज, मत सुनिए। नाई, अपना काम करो।

(नाई फिर उस्तरा उठाता है। राजा रोकता है।)

तेनाली – हमारे यहाँ माता–पिता के स्वर्ग सिधारने पर ही मुंडन होता है।

राजा – तुम्हारे माता–पिता स्वर्ग सिधार चुके हैं, फिर क्या आपत्ति?

तेनाली – महाराज, अब आप ही मेरे माता–पिता हैं। आप सामने विराजमान हैं। फिर मुंडन कैसे कराऊँ? इधर मेरा मुंडन हो, उधर आप स्वर्ग सिधारें, तो?

राजा – (घबराकर) अरे, यह कैसे हो सकता है?

तेनाली – आपके स्वर्ग सिधारने से पहले मैं मुंडन कराऊँ तो ज़रूर आप पर विपत्ति आएगी। इसलिए प्रभु को याद कर रहा हूँ।

राजा – (सोचते हुए) मुंडन से पहले सच में मृत्यु आ गई तो? नहीं, नहीं! रोक दो हाथ, नाई! तेनाली, दंड वापिस लिया मैंने!

तेनाली – महाराज! आप दीर्घायु हों, आप महान् हैं।

राजा – (मुस्कराते हुए) और तुम कुछ कम नहीं। तुमसे कौन जीत सकता है? अशर्फ़ियाँ भी लीं, दंड–अपमान से भी बचे। पर मैं तुम्हारी चतुराई से एक बार फिर खुश हो गया। चलो, बाग में चलें। (सिंहासन से उतरकर तेनाली को साथ लिए बाहर निकल जाते हैं।)

पहला दरबारी – (सिर ठोकते हुए) फिर छूट गया तेनाली।

दूसरा दरबारी – (लड़खड़ाकर गिरते हुए) पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ भी मार लीं।

तीसरा दरबारी – (बाल नोचते हुए) हम फिर हार गए।

सब दरबारी – हाय तेनाली! तुम्हारी बुद्धि ने हमें फिर मात दी।

(पर्दा गिरता है।)

अभ्यास

पाठ से

1. ''भरी सभा में मुंडन? इससे बढ़कर है कोई अपमान!'' ये शब्द किसने, किससे और क्यों कहे?

2. मुंडन किसका और क्यों हो रहा था?

3. तेनालीराम ने अपनी किस चतुराई से दंड से मुक्ति पाई और पाँच हजार अशर्फियाँ ले लीं?

4. दरबारी तेनालीराम से क्यो चिढ़ते थे, कारणों को लिखिए।

6PMB6R

भाषा से

1. 'सिर चढ़ना' – प्रस्तुत एकांकी में आपने यह मुहावरा पढ़ा। ऐसे ही सिर पर लिखे गए चार और मुहावरे लिखिए तथा वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

2. नीचे कुछ संज्ञाएँ दी गई हैं। आपको इनसे विशेषण बनाने हैं।

   शिक्षा, अपमान, दोष, ढोंग, क्रोध, ज्ञान।

3. विलोमार्थी शब्दों की जोड़ी बनाइए।

प्रशंसा	अव्यवस्था
चतुराई	सज्जन
खुश	पराजय
दुष्ट	निंदा
उत्तम	नाखुश
जय	मूर्खता
व्यवस्था	अधम

योग्यता विस्तार

1. तेनालीराम की चतुराई की कई प्रसिद्ध कथाएँ हैं। ऐसी ही कोई एक–एक कथा कक्षा में अलग–अलग विद्यार्थी सुनाए।
2. शतरंज का जन्म भारत में हुआ था। ऐसे और खेलों का पता लगाइए जिनकी जन्मभूमि भारत है।
3. सोचिए कि यदि आप तेनालीराम की जगह होते/होतीं तो क्या करते/करतीं ?
4. इस एकांकी को कहानी के रूप में कक्षा में सुनाइए।
5. इस एकांकी को अभिनय द्वारा बालसभा में प्रस्तुत कीजिए।
6. शतरंज का खेल बुद्धि का खेल है। शतरंज की बिसात का चित्र देखिए और समझिए। इसमें प्रत्येक मोहरा निश्चित स्थान पर रखा जाता है,फिर खेल प्रारंभ होता है। प्रत्येक मोहरे की चाल निर्धारित रहती है। इनकी चालों के बारे में जानकारी लीजिए ।

शतरंज की बिसात

काले मोहरे

हाथी	घोड़ा	ऊँट	वज़ीर	राजा	ऊँट	घोड़ा	हाथी
प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा
प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा
हाथी	घोड़ा	ऊँट	वज़ीर	राजा	ऊँट	घोड़ा	हाथी

सफेद मोहरे

●●●

पाठ 16

काव्य-माधुरी

–संकलित

72JBQL

भक्ति कालीन काव्य धारा में सूर, तुलसी, रसखान, धरमदास का अप्रतिम स्थान है। इन भक्त–संत कवियों की भाव अभिव्यक्ति में भाषा और शैली की अपनी विविधता अवश्य है पर सार एक ही है ईश्वर के साकार रूप अथवा निराकाररूप की भक्ति में अपने को लीन करना। सूर जहाँ ब्रजभाषा में कृष्ण की बाल लीला का गायन करते हैं वहीं तुलसी अवधी में राम के चरित्र का रेखांकन करते हैं। यही स्थिति रसखान की है जो कृष्ण की भक्ति में इतने समर्पित हैं कि हर जन्म में ब्रज में बसने को व्याकुल हैं। धरमदास जी जो बहुश्रुत कबीर के शिष्य हैं अपनी मातृभाषा में सांसारिकता से मुक्ति और सद्गुरु का संदेश सुनाते हैं, जिससे मानव जन्म की प्राप्ति को सार्थक बनाया जा सके।

मैया मोरी, मैं नहिं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।।
चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।
मैं बालक बहियन कौ छोटौ, छींकौ केहि विधि पायो।।
ग्वाल–बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।
तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।।
जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।
यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।।
सूरदास, तब बिहँसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो।।

– सूरदास

बैठी सगुन मनावत माता।
कब अइहैं मेरे लाल कुसल घर, कहहु काग फुरि बाता।।
दूध भात की दोनी दैहौं, सोने चोंच मढ़ैहौं।
जब सिय सहित बिलोकि नयन भरि, राम–लखन उर लैहों।।
अवधि समीप जानि जननी जिय, अति आतुर अकुलानी।

गनक बुलाइ पाँय परि पूछति, प्रेम मगन मृदु बानी।।
तेहि अवसर कोउ भरत निकट ते, समाचार लै आयो।
प्रभु आगमन सुनत तुलसी मनो, मीन मरत जल पायो।।

– तुलसी

मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पशु हौं तो कहा बस मेरौ, चरौं नित नंद की धेनु मझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर कारन।
जो खग हौं तो बसेरौ करौं, नित कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

– रसखान

हमार का करै हाँसी लोग।
मन मोर लागे है सतगुरु से, भला होय के खोट।।
जब से सतगुरु ज्ञान दए हैं, चले न केहू के जोर।
मात रिसाई, पिता रिसाई, रिसाय बटोहिया लोग।।
ज्ञान खड़ग तिरगुन कौ मारौ, पाँच पचीसो चोर।
अब तौ मोहि ऐसन बन आए, सतगुरु रचे संजोग।।
आवत साथ बहुत सुख लागै, जात बियापे रोग।
धरमदास बिनबै कर जोरों, सुनौ हो बंदी छोर।।
जाके पद त्रय लोक से न्यारा, सो साहब कस होय।।

– धरमदास

टिप्पणी–

जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर कारन = कृष्ण ने गोकुलवासियों को इंद्र की पूजा न करके गोवर्धन पर्वत की पूजा करने के लिए प्रोत्साहित किया था। इससे इंद्र ने नाराज होकर गोकुल पर बड़े वेग से वर्षा कराई। कृष्ण ने तब गोवर्धन पर्वत के नीचे सारे गोकुलवासियों को बुलाकर उनकी रक्षा की थी।

दूध–भात की .... मढ़ैहों = आज भी लोगों में ऐसी मान्यता है कि घर में अगर कोई प्रिय व्यक्ति विदेश से आ रहा हो तो कौआ प्रातः ही मुँडेर पर बैठकर 'काँव–काँव' करता है। ऐसा ही दृश्य राम के वनवास से लौटने के पूर्व कौशल्या माता के सम्मुख उपस्थित हुआ था।

अभ्यास

पाठ से

1. माखन न खाने की सफाई कृष्ण किस प्रकार देते हैं?
2. अपने बेटे कृष्ण की किन बातों को सुनकर माता यशोदा को हँसी आ गई?
3. 'काग चोंच को सोने से मढ़वा दूँगी', कौशल्या कौए को सम्बोधित करती हुई यह क्यों कहती हैं?
4. रसखान के ब्रजभूमि से प्रेम के दो उदाहरण लिखिए।
5. 'ज्ञान खड्ग तिरगुन को मारे' से धरमदास जी का क्या आशय है?
6. धर्मदास ने 'बंदी छोर' किसे कहा है और क्यों?
7. माँ अपने बच्चों के कुशल–मंगल के लिए क्या–क्या करती है?

पाठ से आगे

1. क्या कारण है कि रसखान पुनर्जन्म में किसी भी रूप में ब्रज में जन्म लेने के लिए विधाता से याचना करते हैं? उनकी इस याचना के बारे में विचार कर लिखिए।

2. भावार्थ लिखिए–

   (क) पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर कारन।

   जो खग हों तो बसेरौ करौं, मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।।

   (ख) जब से सद्‌गुरु ज्ञान भये हे, चले न केहू के जोर।

   मात रिसाई, पिता रिसाई, रिसाय बटोहिया लोग।।

3. 'मेरा प्रिय कवि' विषय पर एक पृष्ठ का निबंध लिखिए।
4. आप भी अपने बचपन में अपनी माँ से अवश्य रूठे होंगे। तब आपने कैसे–कैसे रूप धारण किए होंगे, यादकर लिखिए।
5. सूरदास, तुलसीदास, रसखान, धरमदास की कविताओं में क्या समानता दिखाई पड़ती है लिखिए।

भाषा से

1. 'ज्ञान' शब्द के 'न' में 'ई' की मात्रा लगाने से शब्द बना है 'ज्ञानी'। ऐसे ही 'दान', 'मान', 'ध्यान' शब्दों में 'ई'प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. इन शब्दों को छत्तीसगढ़ी बोली में लिखिए।

   दूसरा, पायो, गाय, निकट, कछु, बहियन, परायो, सिर, लगन।
3. इस पाठ में अनेक तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है। निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

   सोना, नाच, साँझ, दूध, पाँय, चोंच, छुद्र।

   'जानि जिय नाचो' में 'ज' की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।
4. इस पाठ में से अनुप्रास अलंकार के कोई दो उदाहरण चुनकर लिखिए।

5. नीचे लिखी काव्य–पंक्तियों को छत्तीसगढ़ी में स्पष्ट कीजिए –

   क. यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहिं नाच नचायो।

   ख. कब अइहैं मेरे लाल कुसल घर, कहहु काग फुरि बाता।

योग्यता विस्तार

1. संत धरमदास हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और समाज–सुधारक कबीरदास जी के शिष्य थे। इनके अन्य पद खोजिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
2. रसखान के कुछ सवैए खोजिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
3. कक्षा में अंत्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित कीजिए जिसमें छंदों का ही प्रयोग हो।
4. सूरदास, तुलसीदास, रसखान व धरमदास जी के जीवन वृत्त पर शिक्षक से चर्चा कीजिए।

●●●

पाठ 17

वर्षा-बहार

– श्री मुकुटधर पांडेय

73KUX7

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध और प्रकृति के चितेरे कवि श्री मुकुटधर पाण्डेय जी की प्रस्तुत कविता वर्षा बहार, वर्षा ऋतु के मनोरम दृश्यों और भावों को सहज रूपों में अभिव्यक्त करती है। वर्षा के कारण संपूर्ण प्राकृतिक परिवेश में जिस तरह के मोहक और आकर्षक परिवर्तन को कवि देखते और महसूस करते हैं उसे सरल भाव–लय में कविता में व्यक्त करते चलते हैं। कवि की दृष्टि मेघमय आसमान से लेकर हवा, पानी बादल, बिजली, जीव, जलचर, सौरभ, सुगीत, हंस, किसान सभी पर पडती चलती है। अंत में कवि का आतुर मन गा उठता है–"इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर, सारे जगत की शोभा है, निर्भर है इसके ऊपर"।

वर्षा बहार सबके, मन को लुभा रही है
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।

बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं
पानी बरस रहा है, झरने भी बह रहे हैं।

चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब,
बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब।

तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते,
फिरते लाखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।

करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे,
मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।

खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।

चलते कतार बाँधे, देखो ये हंस सुंदर,
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।

इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर,
सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।

अभ्यास

पाठ से

1. वर्षा सबके मन को कैसे लुभा रही है ?
2. वर्षा ऋतु में हवा और बादल का दृश्य कैसा है ?
3. सौरभ के उड़ने से क्या हो रहा है ?
4. कवि किसानों के गीतों को मनहर क्यों कह रहा है ?
5. जीव–जलचर पर वर्षा का क्या प्रभाव पड़ रहा है ?
6. पपीहे द्वारा ग्रीष्म ताप खोने का अर्थ क्या है ?
7. 'सारे जगत की शोभा निर्भर इसके उपर' कहने से कवि का क्या आशय है ?

पाठ से आगे

1. वर्षा का मोहक रूप आप भी देखते होंगे वर्षा के कारण हमारे आस–पास की प्रकृति में क्या परिवर्तन आता है ?
2. वर्षा ऋतु जीवन और जगत को सरस बना देती है कैसे ? आपस में चर्चा कर लिखिए।

3. वर्षा ऋतु की अपनी चुनौतियाँ भी हैं जैसे रास्ते में कीचड़ का होना, वस्त्रों और बस्ते का भीगना, रास्ते में जल जमाव का होना आदि। आप अपने आस–पास वर्षा के कारण किस तरह की कठिनाइयों को देखते हैं, चर्चा कर उनका लेखन कीजिए।
4. वर्षा ऋतु का किसानों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? सहपाठियों से बातचीत कर उसे निबन्ध के रूप में लिखिए।
5. वर्षा का प्रभाव पेड़, पौधों वनस्पतियों पर किस प्रकार पड़ता है ? इस विषय पर चर्चा कर अपने विचारों को व्यक्त कीजिए।

भाषा से

1. इस चौखट में चार शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। शब्द लिखकर उनके सामने पर्यायवाची शब्द लिखिए।

आकाश, पानी, बादल, मेघ, हवा, वायु, नभ, तोय, गगन, नीर, जलद, पवन।

2. इनके विलोम शब्द लिखिए–

ठंडी, सुख, सुन्दर, प्रसन्न।

3. 'मोद' में 'आ' उपसर्ग के योग से शब्द बना है – 'आमोद।' इसी प्रकार निम्नांकित उपसर्गों के योग से नए शब्द बनाइए–

अ, अनु, प्र, परि

4. **(क)** "तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते।"
इस पंक्ति में **'जीव जलचर'** को ध्यान से पढ़िए। इसमें 'ज' शब्द की आवृत्ति दो बार हुई है। इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है। इस कविता में से अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण लिखिए।
(ख) "दामिनी दमक रही घन माहीं – खल की प्रीति यथा थिर नाहीं", इस पंक्ति में दामिनी (बिजली) की चमक को खल (दुष्ट) की प्रीति के समान अस्थिर बताया गया है। जब दो वस्तुओं में समान गुण के कारण समता बताई जाती है तब उपमा अलंकार होता है। उपमा अलंकार के लिए चार बातें आवश्यक हैं– **1.** जिसकी तुलना की जाय या जिसकी उपमा दी जाए। **2.** जिससे तुलना की जाए या जिससे उपमा दी जाए। **3.** जिन गुणों के कारण तुलना की जाय या उपमा दी जाय। **4.** जिन शब्दों से उपमा प्रगट होती है। जिसकी तुलना की जाय उसे **उपमेय** कहते हैं। जिससे तुलना की जाए उसे **उपमान** कहते हैं। समान गुणों को **साधारण धर्म** कहते हैं और जैसे– जिमि, ज्यों, सम, सा, तुल्य आदि शब्द **वाचक शब्द** कहलाते हैं।
ऊपर के उदाहरण में 'दामिनी की दमक' उपमेय है, 'खल की प्रीति' उपमान है; 'स्थिर न होना' साधारण धर्म है और 'यथा' वाचक शब्द। इसलिए यह उपमा अलंकार है।
5. अपनी पढ़ी हुई कविता से उपमा अलंकार का कोई उदाहरण चुनकर लिखिए।
6. इस कविता में प्रयुक्त तत्सम और तद्भव शब्दों की सूची बनाइए।

योग्यता विस्तार

1. वर्षा ऋतु पर बहुत सारी कविताएँ आपने पूर्व की कक्षाओं में पढ़ी होंगी उन्हें लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
2. वर्षा ऋतु में हमारे जीवन में क्या चुनौतियाँ आती हैं इसका आपस में मिलकर चित्रांकन कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
3. यहाँ कविता की प्रथम पंक्ति दी गई है। इसके आधार पर अन्य तीन पंक्तियों की रचना कीजिए।
बादल बरसें, नाचें मोर
_____ _____ _____
4. तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के किष्किंधाकांड में वर्षा ऋतु का वर्णन किया है। उसकी कुछ पंक्तियाँ पढ़िए।
घन घमंड नभ गरजत घोरा – प्रियाहीन डरपत मन मोरा।
दामिनि दमक रही घन माहीं – खल की प्रीति यथा थिर नाहीं।
बरसहिं जलद भूमि नियराए – यथा नवहिं बुध विद्या पाए।
अर्क जवास पात बिनु भयऊ – जिमि सुराज खल उद्यम गयऊ।
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे – खल के बचन संत सह जैसे।

●●●

74ME4S

पाठ 18

मितानी

–लोककथा

हमर देश के संस्कृति म मितानी के अब्बड़ महत्तम हे। राम–सुग्रीव अउ कृष्ण–सुदामा के मितानी के बारे म तुमन जानत होहू। वइसे तो मिलइया–जुलइया मनखे मन के बीच म मितानी होइ जाथे,पर छत्तीसगढ़ म मितानी के एक नवा रीत हवय। ओ आय मितानी बदे के परंपरा। मितानी के नता ह कई पीढ़ी के नता आय। मितान बदइया के लइका अउ नाती–नतुरा मन घलो ये नता ल बड़ मान देथें। मितान के विपत्ति म सहायता करना सबले बड़का धर्म आय। आवव, अइसने एक ठन लोककथा पढ़न,जेमा केछवा और मँजूर के मितानी के बारे म बताय गय हे।

तरिया के निरमल पानी म खोखमा के सुग्घर–सुग्घर फूल – फूले रहँय। फूल म तितली अउ भौंरा मन लुर–लुर के गीत गावत रहँय। तरिया के तीर बर,पीपर,आमा,अमली के घन पेड़ रहँय। ओ तरिया म एक ठन केछवा रहय। ओही तरिया पार के पीपर पेड़ म एक ठन मँजूर घलो रहय। एहर तीर–तखार के खेत–खार म जा के चारा चरय अउ पीपर पेड़ म बसेरा करय। जब करिया–करिया बादर उमडे–घुमड़े त मँजूर हर अपन पाँख ल छितराके झूम–झूमके नाचय। एती हवा ले पीपर पान झूम–झूमके गीत गावय अउ ताली बजावय। केछवा हर तरिया ले निकल के मँजूर के नाचा ल देख के मगन हो जाय।

केछवा हर मँजूर ल कथे–'वा भाई मँजूर, तँय तो बढ़िया नाचथस अउ तोर पाँख हर बहुत सुग्घर सजे हे। लगथे अगास के चंदा–चँदैनी हर पाँख म उतरे हें।' सुन के मँजूर हर मनेमन मुचमुचाइस। मँजूर हर रोज पीपर के रूख ले उतर के तरिया के पार म नाचय। केछवा हर ओला मन भर के देखय। मँजूर हर तरिया के पानी पी के पीपर पेड़ म बइठ के अराम करय अइसन तरह ले मँजूर अउ केछवा म दूनों के पोठ मितानी होगे।

एक दिन मँजूर हर मगन होके नाचत रहिस त केछवा हर किहिस–''मितान ! लकठा म आके नाचव न! काबर के तुँहर नचाई हर मोला नीक लागथे। मन के अघात ले देखे चाहत हँव।'' मँजूर ह केछवा के मया के गोठ ल टारे नइ सकिस अउ तीर म आके नाचे लगिस। अब अइसन रोज होवय. ... मँजूर नाचे अउ केछवा हर देखे। मितानी म मया के धार बोहाय लागिस।

एक दिन संझा सिकारी आके उहाँ अपन फाँदा ल फैला दिस। एला केछवा अउ मँजूर नइ जानिन। बिहनिया ओमा मँजूर ह फँदगे। अब तो मँजूर के करलाई होगे। अपन मितान ल कथे–"मितान!मोला बचावव,सिकारी आही, तहाँ मोला मार डारही। तोर मितानी अउ मया म परान गँवा डारहूँ, तइसे लागथे। उबारे के कुछु उदिम करव।" केछवा बड़ चतुरा रहिस। ओहर हड़बड़ाइस नहीं। फाँदा म परे मितान ल कथे–"काहीं फिकर झन करव। धीरज बाँधे रहव,तुँहला फाँदा ले छोड़ाहूँ। संकट के बेरा मितान हर मितान के काम नइ आइस त ओहर मितान नोहय।"

एती दूनो मितान के गोठ होते हे अउ ओती सिकारी आगे। फाँदा म फँदे मँजूर ल धरके फाँदा ले निकाले लगिस त केछवा हर सिकारी ल कथे –"तँय तो मोर मितान ल फाँदा म फोकट फँसाए हस। एला मार के का करबे ?" अतका म सिकारी हर हाँसत कथे–"फसातेंव नहीं त का करतेंव। एहर मोर धंधा आय। एला मारँव नहीं, बजार म बेंच के रुपिया पाहूँ अउ दार–चाँउर बिसाहूँ ....।"

केछवा कथे–"बस अतकेच। छोड़ दे, मोर मितान ल। जंगल के कोनो जीव ल मारे ले हत्या लगथे। एला छोड़बे त एकर बदला म तोला एक ठन बढ़िया चीज देहूँ, जेन ल बेंच के तोर परिवार बर दार–चाउँर बिसा लेबे।" सिकारी कहिस–"तोर का बिंसवास।" केछवा हर पानी भीतर बुड़िस अउ छिन भर म एक ठन मोती लान के कथे–"ले ! एहर मोती आय,बेचबे त खूब पइसा मिलही।"

सिकारी हर मोती ल लेके खुश होगे। मँजूर ल छोड़ दिस अउ कुलकत घर आइस। सिकारी के दू झन बेटा रहँय–कोंदा अउ मंसा। सिकारी हर अपन दूनो बेटा ल मोती ल देखाइस त ओला ले बर दुनो झन झगरा होय लगिन। ऊँकर मनके झगरा ल देख के सिकारी ह सोंचिस–'मोती ह बड़ कीमती हे, एला छोड़त नइ बने,अउ छोड़त हँव त घर म झगरा हे।' सिकारी हर असमंजस म परगे।

एक दिन ओही मेर फाँदा ल फेर फैलाइस।.... मँजूर फँदगे। एक पइँत परान बचे रहिस। अब का होही ? केछवा अउ मँजूर ल गुने ल परगे। मँजूर कथे–"मितान! एक पइँत परान ल फेर बचावव।" केछवा ल कुछू उपाय सुझत नइ रहय। कथे–"हाँ,मितान! तोला बचाए बर गुनत हँव, ये पइँत जान बचगे त तोला ये ठउर ल छोड़के जंगल म जाए ल परही,जिंहा ये सिकारी झन जा सकय। ओहर बड़ लालची हे। मोती के लालच म घेरी–बेरी फाँदा ल खेलही।" केछवा के गोठ ल सुन के मँजूर ल थोकिन दु:ख लगिस फेर सोंचिस, परान बचाय बर मितान के मया ल छोड़ के जंगल बीच जाएच ल परही। अतका म सिकारी आ गे। मँजूर ल फाँदा म फँदे देख के कुलक गे। एती केछवा हर सिकारी ल कथे– "ये सिकारी भाई! मोर मितान ल काबर फँसाए हस? तोला तो महीना भर के खरचा के पुरता मोती दे रहेंव। अइसन लालच झन कर,एहर अनियाव आय।"

सिकारी कथे–"तैं तो बात बड़ नियाँव के कहत हस। एमा मोर कोती ले कोनो लालच नइये। मोती ल देखके मोर दूनो बेटा मन मोती ल ले बर झगरे लगिन,मारा–पीटा करे लगिन।ओ मन ल झगरा ले बचाय खातिर मोला फाँदा डारे बर परिस हे। अब ओइसनेच मोती लान के अउ दे देवव त मैं ह ये मँजूर ल ढील देहूँ। मोती ह ओइसनेच होना चाही–न घट,न बढ़।"

केछवा ल उपाय सूझगे। ओ ह सिकारी ल कथे–"सिकारी भइया !ओइसनेच मोती लाने खातिर पहिली वाले मोती के नाप–जोख करे बर परही,तउले बर परही। मैं तोला ओइसनेच मोती दे बर

तियार हँव। फेर पहिली वाले मोती ल लान के तैं मोला दे दे।'' केछवा के बात ल सुन के सिकारी के मन कुलक गे। मन म थोरिक लालच अमागे। ओहा केछवा के बात ल मान गे। फाँदा ले मँजूर ल ढील दिस, सिकारी मंजूर उड़िया गे अउ मोती ल लाय बर घर कोती दउँड़गे।

सिकारी ह मोती लान के केछवा ल दे दिस। केछवा ह मोती ल पानी म फेंक दिस अउ सिकारी ल किहिस–''तँय एक मोती लेवस नहीं अउ मँय ह दू मोती देवँव नहीं।आज तँय बेटा मन के खातिर फाँदा डारे हस। काली अपन घर–गोसइन के कहे म फाँदा डारबे। परनदिन अपन परोसी मन खातिर इही बूता करबे। तोर लालच ह बाढ़तेच जाही। तैं लालची भर नइ हस,बिंसवासघाती घलो हस।'' अइसे कहिके केछवा ह पानी भीतर डुबकी मार दिस। सिकारी ह हाथ रमजत रहिगे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

लुर–लुर करना	=	मँडराना	पोठ	=	समृद्ध
लकठा	=	समीप,नजदीक	नीक	=	अच्छा,सुंदर
अघात	=	तृप्त होना	गोठ	=	बात या बातचीत
फाँदा	=	जाल	करलइ	=	दुःख,व्यथा,विलाप
उदिम	=	उपाय	कुलक भरिस	=	खुश हुआ,
ढिलना	=	मुक्त या स्वतंत्र करना			प्रफुल्लित हुआ
रमजत	=	मलता हुआ, रगड़ता हुआ	ठऊर	=	स्थान

अभ्यास

पाठ से

1. मंजूर हर अपन पाँख ल काबर छितराय हे ?
2. केछवा ह मंजूर ल पहिली बार देखके का कहिथे ?
3. मंजूर ह सिकारी के फाँदा मा कइसे फसगे?
4. अपन मितान के छोड़े के खातिर केछुवा ह सिकारी ल का कहिथे?
5. सिकारी ह मंजूर ल काबर छोड़ देथे ?
6. सिकारी के लालच बाढ़े के का कारण रहिस ?
7. आखिर म केछवा ल का उपाय सूझिस अउ ओ हर का करिस ?
8. सिकारी ह काबर पछतावत रहिगे ?

पाठ से आगे

1. मंजूर सहीं कहूँ तुम्हर मितान कोनो मुसीबत में फस जाही त तुमन ओला उबारे बर का उदिम करहू ? सोच के लिखव।

2. मंजूर के जगह म केछ्वा ल सिकारी फँसा लेतिस त केछ्वा ल बचाय बर मंजूर का सोचतिस? साथी मन संग चर्चा करके लिखव।
3. मंजूर ल फाँदा म फंसे देखके केछवा कहूँ भाग जातिस त दूनो के मितानी मा का परभाव पड़तीस सोच के लिखव।
4. सिकारी ह मोती के लालच म पहिली मोती ल घलो गवाँदिस अउ लालच नई करतिस त ओकर जीवन म का सुधार होतिस ? साथी मन संग सोच के लिखव।

भाषा से

1. खाल्हे लिखाय मुहावरा मन के अर्थ लिखव अउ वाक्य म परयोग करव–
पोटा–काँपना, करलइ होना, असमंजस म परना, लालच म परना।
2. पाठ म आय 'मितानी' व 'सिकारी' शब्द भाव वाचक संज्ञा आय जौन ह मितान, सिकार शब्द म 'ई' प्रत्यय लगके बने हवय। अइसने 'ता' प्रत्यय लगा के महान के महानता शत्रु के शत्रुता शब्द बनाय जाथे। अइसने खाल्हे दे शब्द मन ल **ई** अउ **ता** प्रत्यय लगाके बनावव–
बीमार, सच्चा, बुरा, प्रबल, विमुख, कांत, शिष्य।
3. खाल्हे लिखाय शब्द मन ल पढ़व–
रहय–रहना, गावय–गाना, करय–करना, छितरावय–छितराना, मुचमुचावय–मुचमुचाना, लागय–लगना ये सब शब्द मन ह कोनों काम के होय के बोध कराथे इही ल क्रिया कहे जाथे। अइसने पाठ में आय क्रिया शब्द ल खोज के हिंदी में अर्थ लिखव।
4. खाल्हे लिखाय शब्द मन के हिंदी में अर्थ लिखव अउ ओकर उल्टा शब्द लिखव–
मितानी, खुश, चतुरा, बिसाना, तीर।
5. उचित संबंध जोड़व–

क	ख
खोखमा	फाँदा
मंजूर	निरमल
पानी	सुघ्घर
भौंरा	पाँख
सिकारी	गीत

योग्यता विस्तार

1. अपन आसपास म मितानी के कोनों किस्सा सुने होहू ओला लिखव।
2. राम अउ सुग्रीव के मितानी के बारे में पता करके अपन भाषा म लिखव।

●●●

75NXBD

पाठ 19

शहीद बकरी

—श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय

बहुधा यह बात रेखांकित की जाती है कि संगठन में शक्ति है। अगर कोई भी समूह संगठित है तो वह अत्याचार, अन्याय और उत्पीड़न का डट कर मुकाबला करते हुए उसे परास्त कर सकता है। लेकिन यह भी सच है कि पहल कोई एकाकी ही करता है। ऐसा ही एक पहल इस कहानी में एक युवा बकरी भेड़िये से डट कर मुकाबला करते हुए करती है। युवा बकरी मरने के भय से बाड़े में कैद होना स्वीकार नहीं करती बल्कि वह हत्यारे और निरीह बकरियों का खून करने वाले भेड़िये को घायल, पीड़ा और दर्द से छटपटाते हुए देखना चाहती है। बकरी अपने आक्रमण से भेड़िये को लहूलुहान और घायल कर देती है, यह अवश्य होता है कि इसमें वह अपने साथियों की अकर्मण्यता के कारण ढेर हो जाती है, पर एक उदाहरण अवश्य रख जाती है कि साहस से भरी सिर्फ एक बकरी भी भेड़िये को घायल और घावों के सड़न से मरने को बाध्य कर सकती है।

हरे–भरे पहाड़ पर बकरियाँ चरने जातीं तो दूसरे–तीसरे रोज एक–न–एक बकरी कम हो जाती। भेड़िए की इस धूर्तता से तंग आकर चरवाहे ने, वहाँ बकरियाँ चराना बंद कर दिया और बकरियों ने भी मौत से बचने के लिए बाड़े में कैद रहकर जुगाली करते रहना ही श्रेष्ठ समझा। लेकिन न जाने क्यों एक युवा नई बकरी को यह बंधन पसंद नहीं आया। अत्याचारी से यों कब तक प्राणों की रक्षा की जा सकेगी ? वह पहाड़ से उतरकर किसी रोज बाड़े में भी कूद सकता है। शिकारी के भय से मूर्ख शुतुरमुर्ग रेत में गर्दन छुपा लेता है। तब क्या शिकारी उसे बख़्श देता है ? इन्हीं विचारों से ओत–प्रोत वह हसरत भरी नजरों से पर्वत की ओर देखती रहती। साथिनों ने उसे आँखों–आँखों में समझाने का प्रयत्न किया कि वह ऐसे मूर्खतापूर्ण विचारों को मन में न लाए। भोग्य सदैव से भोगने के लिए ही उत्पन्न होते रहे हैं। भेड़िए के मुँह हमारा खून लग चुका है, वह अपनी आदत से कभी बाज़ नहीं आएगा।

लेकिन नई युवा बकरी तो भेड़िए के मुँह में लगे खून को ही देखना चाहती थी। वह किस तरह छटपटाता है, यह करतब देखने की उसकी लालसा बलवती होती गई। आखिर एक रोज़ मौका पाकर बाड़े से वह निकल भागी और पर्वत पर चढ़कर स्वच्छंद विचरती, कूदती– फाँदती दिन भर पहाड़ पर चरती रही; मनमानी कुलेलें करती रही। भेड़िए को देखने की उसे उत्सुकता भी बनी रही, परन्तु उसके दर्शन न हुए। झुटपुटा होने पर लाचार, जब वह नीचे उतरने को बाध्य हुई तो रास्ते में दबे पाँव भेड़िया आता हुआ दिखाई दिया। उसकी रक्तरंजित आँखें, लपलपाती जीभ और आक्रमणकारी चाल से वह सब कुछ समझ गई। भेड़िया मुस्कराकर बोला, "तुम बहुत सुंदर और प्यारी मालूम होती हो। मुझे तुम्हारी जैसी साथिन की आवश्यकता थी। मैं कई रोज से अकेलापन महसूस कर रहा था। आओ, तनिक साथ–साथ पर्वतराज की सैर करें।"

बकरी को भेड़िए की बकवास सुनने का अवसर न था। उसने तनिक पीछे हटकर इतने जोर से टक्कर मारी कि असावधान भेड़िया सँभल न सका। यदि बीच का भारी पत्थर उसे सहारा न देता तो औंधे मुँह नीचे गिर गया होता।

भेड़िए की जिंदगी में यह पहला अवसर था। वह किंकर्तव्यविमूढ़–सा हो गया। टक्कर खाकर अभी वह सँभल भी न पाया था कि बकरी के पैने सींग उसके सीने में इतने जोर से लगे कि वह चीख उठा। क्षत–विक्षत सीने से लहू की बहती धार देख, भेड़िए के पाँव उखड़ गए। मगर एक निरीह बकरी के आगे भाग खड़ा होना उसे कुछ जँचा नहीं। वह भी साहस बटोरकर पूरे वेग से झपटा। बकरी तो पहले से ही सावधान थी; वह कतराकर एक ओर हट गई और भेड़िए का सिर दरख्त से टकराकर लहूलुहान हो गया।

लहू को देखकर अब भेड़िए के लहू में भी उबाल आ गया। वह जी–जान से बकरी के ऊपर टूट पड़ा। अकेली बकरी उसका कब तक मुकाबला करती ? वह उसके दाँव–पेंच देखने की लालसा और अपने अरमान पूरे कर चुकी थी। साथियों की अकर्मण्यता पर तरस खाती हुई बेचारी ढेर हो गई।

पेड़ पर बैठे हुए तोते ने मुस्कराकर मैना से पूछा, "भेड़िए से भिड़कर भला बकरी को क्या मिला?"

मैना ने सगर्व उत्तर दिया, "वही जो अत्याचारी का सामना करने पर पीड़ितों को मिलता है। बकरी मर जरूर गई, परन्तु भेड़िए को घायल करके मरी है। वह भी अब दूसरों पर अत्याचार करने के लिए जीवित नहीं रह सकेगा। सीने और मस्तक के घाव उसे सड़–सड़कर मरने को बाध्य करेंगे। काश, बकरी की अन्य साथिनों ने उसकी भावनाओं को समझा होता। छिपने के बजाय एक साथ वार किया होता तो वे आज बाड़े में कैदी जीवन व्यतीत करने के बजाय पहाड़ पर निःशंक और स्वच्छंद विचरती होतीं।"

तोता अपना–सा मुँह लेकर चुपचाप शहीद बकरी की ओर देखने लगा।

अभ्यास

पाठ से

1. बकरियों ने कैद में ही रहकर जुगाली करना क्यों उचित समझा ?
2. युवा नई बकरी को बाड़े का बंधन पसंद क्यों नहीं आया ?
3. युवा बकरी ने भेड़िए पर किस तरह वार किया ?
4. भेड़िए ने बकरी को अपने जाल में फँसाने के लिए क्या प्रलोभन दिया ?
5. तोते ने मुस्कुराते हुए मैना से क्या सवाल पूछा और क्यों ?
6. "भोग्य सदैव से भोगने के लिए ही उत्पन्न होते रहे हैं" से क्या तात्पर्य है ?

पाठ से आगे

1. युवा बकरी द्वारा भेड़िए पर पहले ही आक्रमण करने के पीछे क्या कारण रहे होंगे ? आप विचार कर लिखिए?
2. आपकी समझ में भेड़िए से भिड़कर बहादुरी से अपनी जान गँवाने वाली युवा बकरी को क्या मिला ?

3. यदि अन्य बकरियाँ उस युवा बकरी का साथ देतीं तो आपके अनुसार भेड़िए और बकरी के बीच के संघर्ष का परिणाम क्या होता ?
4. "तोता अपना सा मुँह लेकर शहीद बकरी की ओर देखने लगा" पंक्ति के द्वारा कहानीकार क्या कहना चाहता है? अपने साथियों से बात–चीत कर उत्तर दीजिए।

भाषा से

1. पाठ में निम्नलिखित मुहावरों का व्यवहार किया गया है। इन मुहावरों का वाक्य में आप इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि इनका अर्थ स्पष्ट हो जाए –

   औंधे मुँह गिरना, अपना सा मुँह लेकर रह जाना, टूट पड़ना, लहू में उबाल आना, तरस खाना, ढेर हो जाना, पाँव उखड़ना, मुँह में खून लगना, आँखों ही आँखों में समझना।
2. विशेषण के इन उदाहरणों में दूर + ई = दूरी, चतुर + आई = चतुराई, महान + ता = महानता। इन उदाहरणों में **ई, आई** अथवा **ता** प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाई गई है। इसी प्रकार से निम्नलिखित विशेषणों में उपयुक्त प्रत्यय का प्रयोग कर भाववाचक संज्ञा बनाइए–

   सफल, बेईमान, कटु, मित्र, अकर्मण्य, नादान, सावधान, अत्याचार, स्वच्छंद, श्रेष्ठ।

3. निम्नलिखित शब्दों का हिंदी रूप लिखिए–

   नजर, खून, दरख्त, अरमान, हसरत, करतब, मुकाबला, बेचारा।

4. पाठ में आए निम्नांकित शब्दों का विलोम लिखिए–

   सावधान, धूर्त, स्वच्छंद, भारी, सहारा, अपने, हरे–भरे।

5. क. अत्याचारी से **कब तक** प्राणों की रक्षा की जा सकेगी ?

   ख. तब **क्या**, शिकारी उसे बख्श देता है ?

   ऊपर के दोनों वाक्य प्रश्नवाचक वाक्य हैं और इनके अंत में प्रश्नसूचक चिह्न (?) का प्रयोग हुआ है। जब वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्द जैसे **कब, कहाँ, क्यों, कैसे, कौन, क्या** आदि का प्रयोग वाक्य में करते हुए प्रश्न पूछा जाता है तो वहाँ इस चिह्न (?) का प्रयोग होता है आप पाठ से इसी प्रकार के दस वाक्यों की रचना कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. "संगठन में शक्ति है'' इस विषय पर कक्षा में संभाषण प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए और मुख्य बिन्दुओं को लिखिए।
2. सोचिए कि यदि जंगल से गुजरते समय भालू से आपका सामना हो जाए तो आप क्या करेंगे ? साथियों के साथ विचार कर लिखिए और कक्षा में सुनाइए।

●●●

7HUTHV

पाठ 20

लक्ष्य-बेध

—श्री रामनाथ 'सुमन'

किसी भी मनुष्य की सफलता और उसके जीवन की सार्थकता उसके लक्ष्य निर्धारण और उस लक्ष्य प्राप्ति के लिए नियमित कठिन परिश्रम पर निर्भर करता है। यह पाठ दो छोटे दृष्टांत के जरिये जीवन के इन्हीं यथार्थ को, समझ के साथ प्रस्तुत करता है। अर्जुन का जवाब ही उसकी लक्ष्य के प्रति तन्मयता को सिद्ध करता है। वैसा ही उदाहरण मराठों का है जो विचलित मनः स्थिति से उबर कर एक निर्णायक युद्ध करते हुए हारती हुई बाजी जीत लेते हैं। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि हम किसी भी कार्य को कैसे करते हैं ? सार्थकता और पहचान उस कार्य को मिलती है जिसे प्रतिबद्ध होकर एकनिष्ठ भाव से किया जाए।

जिस व्यक्ति ने अपना लक्ष्य निश्चित कर लिया है, उसने अपने जीवन की एक बड़ी कठिनाई दूर कर दी है। वह अनिश्चय, भ्रम, भेद और संदेह के ऊपर उठ जाता है। तब उसके सामने एक प्रश्न होता है, लक्ष्य–बेध कैसे होगा; जीवन के उद्देश्य की सिद्धि कैसे होगी ?

संसार के मनीषियों और कर्मठ पुरुषों ने लक्ष्य–बेध के अनेक उपाय बताए हैं, पर जीवन में सफलता का, लक्ष्य–बेध का, एक मंत्र है जो कभी निरर्थक नहीं हुआ। हमारे कोश में एक छोटा–सा शब्द है–'तन्मयता'। यह छोटा–सा शब्द ही जीवन में लक्ष्य–बेध या कार्य–सिद्धि का मूलमंत्र है।

'तन्मयता' का अर्थ है कि जो लक्ष्य है, उसी से आप भर जाएँ, उसी में लीन हो जाएँ। वह फैलकर आपके संपूर्ण जीवन और कार्य की प्रत्येक दिशा को ढँक ले। सोते–जागते, उठते–बैठते, चलते–फिरते, प्रत्येक क्रिया में, केवल वह लक्ष्य आपको दिखे, चारों ओर वही वह हो। आपका समस्त ध्यान उसी में केंद्रित हो, उससे अलग आपका जीवन असंभव हो जाए।

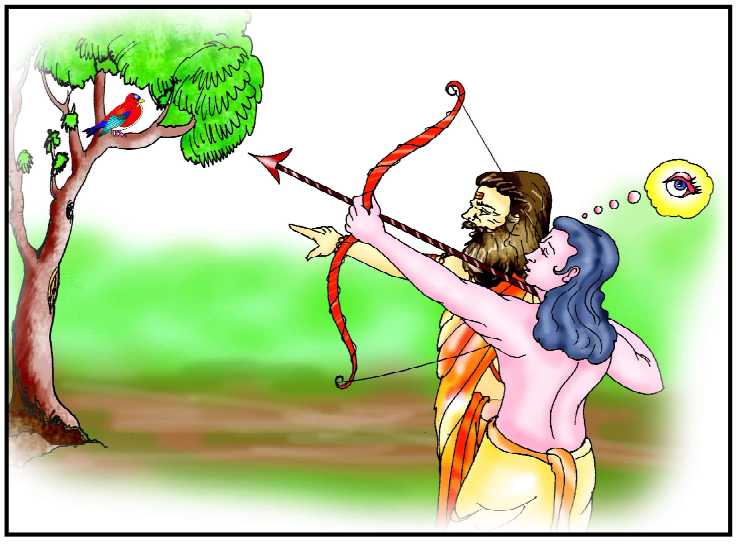

इस तन्मयता की बात करते हुए इतिहास की दो घटनाएँ याद आ रही हैं। पहली घटना महाभारत काल की है। आचार्य द्रोण राजकुमारों को बाणविद्या सिखा रहे थे। समय पर शिक्षा समाप्त हुई और राजकुमार आचार्य के समीप परीक्षा के लिए एकत्र हुए। आचार्य उन्हें एक वनस्थली में ले गए। एक वृक्ष के ऊपर बैठी चिड़िया की आँखों की पुतली

के लक्ष्य–बेध का निश्चय हुआ। आचार्य ने सबको निशाना ठीक करने को कहा और तब एक छोटा–सा प्रश्न किया, "तुम्हें क्या दिखाई देता है ?"

किसी ने कहा, "वह वृक्ष की पतली टहनी है। उस पर लाल रंग की चिड़िया बैठी है। उसकी आँख दिखाई दे रही है।''

किसी ने कहा, "मुझे चिड़िया दिखाई देती है, उसकी आँख में निशाना लगा रहा हूँ।" मतलब किसी ने कुछ उत्तर दिया, किसी ने कुछ; पर सबको अनेक पदार्थ दिखते रहे और उनके बीच लक्ष्य–बेध की तत्परता भी दिखाई पड़ी। जब अर्जुन की बारी आई और आचार्य ने उससे वही प्रश्न दोहराया तो उसने कहा–

"गुरुदेव, मुझे सिवाय चिड़िया की आँख की पुतली के और कुछ दिखलाई नहीं देता।"

आचार्य ने शिष्य की पीठ ठोकी और आशीर्वाद दिया। अर्जुन परीक्षा में सफल हुए।

दूसरी घटना मराठा इतिहास की है। सिंहगढ़ की विजय का दृढ़ संकल्प करके मराठों ने उस पर आक्रमण किया। सारे मराठा सैनिक एक गोह की सहायता से सिंहगढ़ पर चढ़ गए। घोर युद्ध हुआ। युद्ध में उनका नेता तानाजी मारा गया। उसके मारे जाते ही मराठों की सेना हिम्मत हारकर भागने लगी और जिस रस्से के बल चढ़कर ऊपर किले पर आई थी, उसी के सहारे नीचे उतरने का इरादा करने लगी। तानाजी के छोटे भाई सूर्याजी ने जब यह देखा तो आकर चुपके से रस्से का किले की ओरवाला हिस्सा काट दिया और जब मराठे उधर भागे तो चिल्लाकर कहा–"मराठो, भागते कहाँ हो ? वह रस्सा तो मैंने पहले ही काट दिया।" जब मराठों ने देखा कि निकल भागने का कोई उपाय नहीं है, तब सब कुछ भूलकर ऐसे लड़े कि सिंहगढ़ विजय कर लिया।

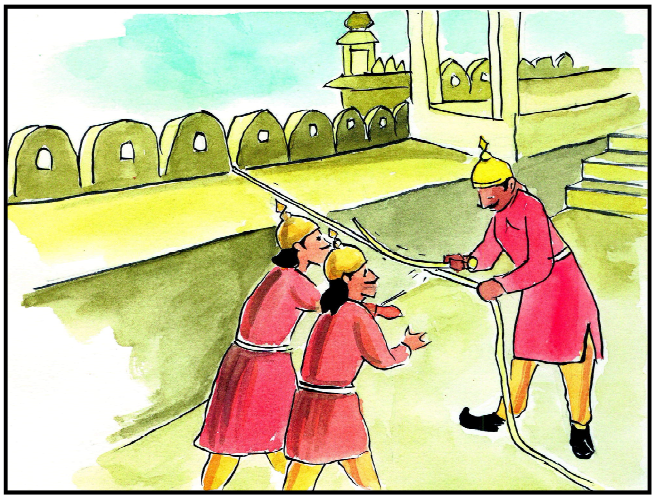

दोनों घटनाएँ स्वयं अपनी बात कहती हैं। अर्जुन की उस परीक्षा के बाद हजारों वर्ष बीत गए हैं, पर आज भी जीवन की परीक्षा में कोटि–कोटि मनुष्यों के सामने आचार्य द्रोण का वह प्रश्न उपस्थित है, "तुम्हें क्या दिखाई देता है ?"

इस प्रश्न के उचित उत्तर पर ही जीवन की सिद्धि निर्भर है। मानवजीवन की सफलता–असफलता की यह एक चिरन्तन कथा है। यह उत्तर लक्ष्य–बेध का एक ही उपाय बताता है–'लक्ष्य में तन्मयता'। जहाँ साधक लक्ष्य में तन्मय है, जहाँ उसे और कुछ दिखाई नहीं देता, जहाँ वह सब कुछ भूल गया है, अपने चारों ओर के ध्यान बँटानेवाले पदार्थों को भूल गया है, लक्ष्य है, लक्ष्य है और कुछ नहीं, वहाँ लक्ष्य– बेध निश्चित है।

दूसरी घटना भी यही कहती है कि जब तक रस्सा काटकर पीछे लौटने की संपूर्ण संभावनाओं का अंत आपने नहीं कर दिया, जब तक लक्ष्य से मन को इधर–उधर हटानेवाला एक भी साधन आपने बचा रखा है, तब तक लक्ष्य–बेध नहीं होगा।

इन दोनों में एक ही बात दोहराई गई है कि लक्ष्य में चित्त को केंद्रित करके लक्ष्य–बेध करो।

धनुष से छूटनेवाला बाण वायुमंडल में यहाँ–वहाँ नहीं घूमता। वह अपने चारों ओर के पदार्थों से नहीं उलझता। वह दाएँ–बाएँ, ऊपर–नीचे नहीं देखता। वह जिस क्षण छूटता है, उसी क्षण से अपने लक्ष्य में केंद्रित होता है। उसका लक्ष्य एक है, उसकी दिशा एक है। वह सीधा जाकर अपने लक्ष्य में मिल जाता है।

कुतुबनुमा की सुई की भाँति एक दिशा और एक लक्ष्य में केंद्रित होना उद्देश्य–सिद्धि का उपाय है। इससे हमारे जीवन के मार्ग में, दूसरे सैकड़ों प्रकाश हमें अपने मार्ग से बहका देने के लिए चमकेंगे और प्रयत्न करेंगे कि हमें अपने कर्त्तव्य और सत्य से डिगा दें पर हमें चाहिए कि अपने उद्देश्य की सुई को ध्रुव तारे की ओर से कभी न हटने दें।

मन की संपूर्ण चेतना को, इच्छाशक्ति को, किसी एक कार्य, दिशा या लक्ष्य में केंद्रित कर देना ही तन्मयता है। जब सूर्य की किरणों को किसी आतिशी शीशे के सहारे एक कागज के टुकड़े पर केंद्रित करते हैं तो कागज जल उठता है। जल में प्रच्छन्न विद्युत को कुछ साधनों से केंद्रित करके बड़े–बड़े कारखाने चलाए जाते हैं। शक्ति पहले भी वहीं रहती है, पर बिखरी होने से वह बेकार है। एकाग्र करके उससे संसार को हिलाया जा सकता है। वैज्ञानिकों का कथन है कि एक एकड़ भूमि की घास में इतनी शक्ति बिखरी हुई होती है कि उसके द्वारा संसार की सारी मोटरों और चक्कियों का संचालन किया जा सकता है।

संसार में काम करनेवाले बहुत हैं, काम को बोझ समझकर करनेवाले और भी अधिक हैं, पर लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर, उसमें एकनिष्ठ होकर काम करनेवाले बहुत थोड़े हैं। पर ये थोड़े से मनुष्य ही हैं जो संसार को हिला देते हैं, जो अपनी एकाग्रता से जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। आप अपने लिए जो भी लक्ष्य चुनिए, उसमें अपने मन और शरीर, अपनी संपूर्ण शक्तियों को केंद्रित कर लीजिए। वह और आप एक हो जाइए। दुनिया को भूल जाइए, अपने को भूल जाइए, केवल लक्ष्य के दर्शन कीजिए और तब उसे बेध लीजिए। संसार आपका है, जीवन आपका है, सफलता आपकी है।

अभ्यास

पाठ से

1. लेखक के अनुसार लक्ष्य भेद का मूल मंत्र क्या है और क्यों?
2. पाठ में तन्मयता के उदाहरण कौन–कौन से हैं ?
3. किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति में तन्मयता की क्या भूमिका है?
4. प्रसिद्ध धनुर्धर अर्जुन के लक्ष्य भेद के बारे में कौन सी कथा है ?
5. सिंहगढ़ के किले को मराठे कैसे जीत पाए ?

6. कुतुबनुमा की सुई हमें क्या सीख देती है ?
7. संसार में काम करनेवाले कैसे–कैसे लोग हैं?
8. लेखक के अनुसार लक्ष्य भेद के लिए क्या आवश्यक है?

पाठ से आगे

1. आप सभी अपने–अपने लक्ष्य की कल्पना कीजिए तथा सोचिए कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति कैसे करेंगे। आपस में चर्चा कर लिखिए।
2. अर्जुन की जगह आप होते तो अपने गुरु के प्रश्नों का आप क्या–क्या उत्तर देते? कल्पना कर अपने उत्तर लिखिए।
3. लक्ष्य से सफलता और असफलता जुड़ी हुई है। परीक्षा में सफल होना आपका लक्ष्य होता है तो इसमें अपनी सफलता के लिए क्या–क्या चाहेंगे? आपस में चर्चा कर लिखिए।
4. आचार्य द्रोणाचार्य द्वारा ली गई परीक्षा में अर्जुन के अतिरिक्त सभी राजकुमार क्यों असफल हो गए? साथियों से बातचीत कर इस प्रश्न का उत्तर लिखिए।
5. मराठा सेनापति सूर्याजी द्वारा सिंहगढ़ किले पर जीत के लिए किले की ओर वाली रस्सी का हिस्सा काटा जाना क्या उचित प्रतीत होता है ? शिक्षक और साथियों से बातचीत कर इसका उत्तर लिखिए।

भाषा से

1. पाठ में इस प्रकार के प्रयोग आपको देखने को मिलेंगे, जैसे उस परीक्षा, इस प्रश्न, जिस क्षण, उनका नेता, जब मराठे। शब्दों का इस प्रकार का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण है अर्थात जब कोई सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्द से पहले आए तथा वह विशेषण शब्द की तरह संज्ञा की विशेषता बताए। पाठ से सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण को खोज कर लिखिए।
2. पाठ में समानोच्चरित शब्द या समोच्चरित शब्द का प्रयोग हुआ है। जो शब्द सुनने और उच्चारण करने में समान प्रतीत होते हों, किन्तु उनके अर्थ भिन्न–भिन्न होते हैं। जैसे–

   और (तथा), ओर (तरफ)।

   चौक (चौराहा), चौंक (चौंक जाना, आश्चर्य में पड़ना)।

   ऐसे ही समान उच्चारण वाले शब्दों को पाठ से चयन कर लिखिए।

   - निम्नलिखित शब्दों के जोड़े दिए गए हैं। इनका अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए जिससे उनके अर्थ स्पष्ट हो सके–

     अवधि–अवधी, गाड़ी–गाढ़ी, उतर–उत्तर, प्रमाण–प्रणाम, दिन–दीन, देव–दैव, धन–धान, पक्का–पका।

3. संसार और परिवार जैसे शब्दों में इक प्रत्यय लगाकर सांसारिक और पारिवारिक शब्द बनते हैं। इसी प्रकार से निम्नलिखित शब्दों में इक प्रत्यय का प्रयोग कर शब्द बनाइए–
स्वभाव, तर्क, अलंकार, न्याय, वेद, व्यापार, लोक, विज्ञान, व्यवहार, समर।
4. पाठ में प्रयुक्त हुए निम्नलिखित शब्दों के विपरीत के शब्दों को लिखिए–
असफलता, एकाग्र, केन्द्रित, एकनिष्ठ, प्रच्छन्न. इच्छा, निश्चित, मतलब, विजय, संचालक।

योग्यता विस्तार

1. तन्मयता के सबसे निकट उदाहरण के रूप में एकलव्य उल्लेखनीय पात्र है। एकलव्य के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त कर कक्षा में सुनाइए।
2. ध्रुवतारा को हम अन्य किन नामों से जानते हैं ? ध्रुवतारे के संबंध में प्रसिद्ध कहानी को अपने बड़े बुजुर्गों से जानकर कक्षा में सुनाइए।
3. लक्ष्य भेद की कई अन्य कहानियाँ आपके परिवेश और समाज में प्रचलित होंगी उन्हें पता कर लिखिए और कक्षा में सुनाइए। इसके अलावा आप और आपके साथी मिलकर कहानी बनाकर सुनाइए।

7IMH2T

●●●

पाठ 21

सुवागीत

—लेखक—मंडल

हमर छत्तीसगढ़ के संस्कृति ह बड़ जुन्ना संस्कृति आय। ये ह मुँहअँखरा–साहित्य के कोठी आय। ये कोठी म आने–आने किसम के गीत घलो भरे हे। इही गीत मन म सुवागीत के महक ह कारी–कमोद धान कस होथे–महर–महर। गाँव के नारी–परानी मन ये गीत ल अपन हिरदे ले गाथें, जइसे ये गीत ह उँकर मन के हिरदे के भाषा होय।

छत्तीसगढ़ ह लोकगीत के फुलवारी आय। जेमा रकम – रकम के लोकगीत के फूल फुले हे। लोकगीत ओला कहिथे जेन ह तइहा जुग ले मुँहअँखरा लोक–जीवन म रचे – बसे हे अउ आज ले एहा मुँहअँखरा चले आवत हे। न एखर लिखइया के नाँव–पता हे,न एकर गवइया के नाँव–पता ।

हमर छत्तीसगढ़ म करमा,ददरिया,भोजली,गउरा,जँवारा,पंथी,डंडागीत गाये जाथे। अइसने एक ठन सुवागीत घलो आय। सुवा मायने मिट्‌ठू। तइहा जुग म मिट्‌ठू ले संदेसा पठोय जात रहिस। सुवागीत म नारी–परानी मन अपन अंतस के मया–पीरा ल गीत रूप म उद्‌गारथें। अउ सुवा ल संबोधित करके गाथें। एकरे सेती ये गीत ल सुवागीत कहिथें।

सुवागीत कातिक महिना म देवारी तिहार के दू–चार दिन आगू ले शुरू होथे। सुवागीत, गीत भर नोहय,एमा नृत्य घलो होथे। सुवागीत अउ नृत्य ह टोली म होथे, जेमा नारी – परानी मन दस–बारा झन रहिथें। माटी के सुवा बना के ओला टुकनी म राखथें। टुकनी के सुवा ल मँझोत म मढ़ा के नारी–परानी मन गोल घेरा बना के थपोली बजाथें अउ सुवागीत गाके नाचथें। सुवागीत म कोनो बाजा के प्रयोग नइ होय। हाथ के थपोली ह ताल के काम करथे। एमा लइका मन,मोटियारी अउ सियानिन मन के अलग–अलग दल रहिथे। दल वाले मिलके गाथें त बड़ नीक लागथे। निहर–निहर के, झूम–झूम के अउ घूम–घूम के, ताली बजा के नाचथें त सुवागीत अउ नृत्य के सोभा देखतेच बनथे।

सुवा नचइया जम्मो दाई–दीदी मन गाँव भर गिंजर–गिंजरके घरो–घर सुवानृत्य करथें। सुवागीत–नृत्य कब ले शुरू होय हे,एकर कोनो लिखित रूप नइ मिलय। फेर सियान मन कहिथें के ये गजब जुन्ना परंपरा आय। सुवानृत्य काबर नाचे जाथे ? ये सवाल के उत्तर म सियान मन बताथें के सुवानृत्य ले सकलाय धान–चाँउर अउ रुपिया–पइसा ले गउरा बिहाव के खरचा पूरा होथे।

सुवागीत ल नारी–परानी के पीरा के गीत कहे गे हे। काबर के सुवागीत म ओकर अंतस के पीरा अउ ओखर जिनगी के दुख–दरद जादा सुने बर मिलथे। सुवागीत के ये विशेषता हे के एहा 'तरी–हरी नाना,नाना सुवा हो',के बोल ले शुरू होथे। जइसे –

तरी–हरी नाना मोर नाह नारी ना ना रे सुवा मोर
के तिरिया जनम झनि देय,
तिरिया जनम मोर गउ के बरोबर रे सुवना
जहाँ रे पठोय तिंहा जाय,ना रे सुवना .....

सुवा गीत म नारी के दुख–पीरा भर ह नइये, एमा घर–दुवार, खेत–खार,बारी–बखरी, जंगल–पहार,मया–दुलार,साज–सिंगार,धरम–करम,जीवन के मरम, देश अउ समाज के विषय घलो समाय हे, जइसे चिरइ–चुरगुन के बोली उपर ये गीत –

तरी हरी नाहना मोर नाना सुवा रे मोर
तरी हरी ना मोर ना

कोन चिरइया मोर चितर काबर रे सुवना
के कोन चिरइया के उज्जर पाँख–ना रे सुवना
भरही चिरइया मोर चितर काबर
बकुला चिरइया के उज्जर पाँख–ना रे सुवना

कोन चिरइया मोर सुख सोवय निंदिया
कोन चिरइया जागय रात–ना रे सुवना
भरही चिरइया सुख सोवय निंदिया रे सुवना
बकुला जागय सरी रात–ना रे सुवना

नान्हे नोनी ल सुवा नाचे के साध हे त ओ ह अपन दाई करा गोहरावत हे अउ ओकर गहना–गुरिया ल पहिरे बर माँगत हे। एखर सुग्घर बरनन ये गीत म हवय –

दे तो दाई गोड़ के पइरी ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर
दे तो दाई तोर बहूँटा ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर
दे तो दाई तोर सुतिया ल
कहाँ जाबे
सुवा नाचे बर

घर–परिवार ले आगू देश अउ समाज के हाल–चाल घलो सुवागीत के विषय आय। अजादी के पहिली देश–परेम के भावना जगाय बर सुवागीत ह सबल माध्यम रहिस–

सुवना हो .....
दीदी के घर ह सुतंत्र होगे
जोर मारिस भाँटो ह, सुवना हो.....
होगे सुराजी भाँटो ह सुवना
महूँ होहूँ सुराजी .....
कोने डहर के बबा आइस
कोने डहर के बाती बारिस
कान फुँकाहूँ ओ सुवना.....

कान फुँकाहूँ ओ सुवना.....
संत के बानी ये, जागौ रे सुवना...
सुराजी गीत ल, गावौ ओ सुवना...
रेलवाही म सुतगे बबा ह सुवना....
चलो जाबो रेलवाही सुवना.....

सुवागीत म कथागीत गायन के घलो परंपरा मिलथे। जइसे हरिसचंद,राम बनवास,सीता हरन, कालिया दहन, मोरध्वज, सुरजा रानी अउ अइसने कतको प्रसंग सामिल हे–

तरी–हरी नाना मोर ना ना नाना
मय का जानँव, मय का करँव
मोर राम नइ हे ओ
अब सीता ल लेगथे लंका के रावन
मय का करँव
जोगी के रूप धरे निसाचर,
दे भिक्छा मोहि माई,
लेकर भिक्छा अँगन बीच ठाढ़े
रथ में लिए बैठाई
मय का करँव

सुवा नाचे के बाद घर मालकिन ह सुवा नचइया मन के मान–गउन करथे,उँकर टुकनी म धान–चाँउर दे के बिदा करथे त सुवा नचइया मन गीत गाके असीस दे बर नइ भुलाँय। सुवागीत छत्तीसगढ़ के नारी मन के जिनगी के दरपन आय,उँकर हिरदे के उद्‌गार आय,जेन ह मोंगरा फूल कस ममहावत हे। हमर लोकगीत के फुलवारी ह अइसने ममहावत रहय, इही साध हे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

किसम	=	प्रकार	ओला	=	उसे
तइहा जुग	=	अतीत	मुँहअँखरा	=	मुखाग्र
अइसने	=	इसी प्रकार	एखरे सेती	=	इसी कारण
कातिक	=	कार्तिक	थपोली	=	ताली
नीक	=	अच्छा,ठीक	गिंजर–गिंजर	=	घूम–घूमके
निहर–निहर	=	झुक–झुककर	जुन्ना	=	पुराना
सकलाना	=	इकट्ठा होना	तिरिया	=	नारी
नोनी	=	बेटी,लड़की	गोड़	=	पैर

अभ्यास

पाठ से

1. कइसने गीत ल लोकगीत कहिथें ?
2. हमर छत्तीसगढ़ में गाए जाने वाला लोकगीत मन के नाव लिखव।
3. सुवागीत ल सुवागीत काबर कहिथें ?
4. सुवानाच कब नाचे जाथे अउ कोन तरह ले नाचे जाथे ?
5. सुवागीत म ढोलकी ले ताल दे जाथे ।
6. सुवा नाच–गीत ह नारी–परानी के गीत काबर माने गेहे।
7. सुवा नाच म माटी के सुवा काबर बनाय जाथे।
8. सुवा नचइया मन घर–मालकिन ल का असीस देथें।

पाठ से आगे

1. कोन–कोन विषय ऊपर सुवागीत गाए जाथे, बने ओरिया के लिखव। अउ अपन कक्षा में उही एकोठिन गीत ल गा के देखव।
2. सुवागीत के चार पंक्ति लिखव जेमा नारी–परानी के हिरदे के पीरा परगट होथे।
3. सुवागीत म कथा–गीत के उदाहरण लिखव।

4. सुवा नचइया मन घरो–घर जाथें। ओमनला देखके आप मनके मन में का–का भाव उठते लिखव।

5. सुवा नचइया मन के मान–गउन म जउन धान–चाँउर अउ पइसा–कउड़ी मिलथे, तेला सुवा नचइया मन कामे खरचा करत होही, पूछ के लिखव ?

7J6964

भाषा से

1. 'दुख–दरद' अउ 'मान–गउन' शब्द मन ऊपर धियान देवव। ये मन जोड़ी वाला (शब्द–युग्म) शब्द आयँ। पाँच ठन जोड़ी वाला (शब्द–युग्म) शब्द सोंच के लिखव अउ अपन वाक्य म प्रयोग करव।

7JF57R

2. 'गिंजर–गिंजर' शब्द ऊपर धियान देवव। इहाँ 'गिंजर' शब्द ह दू बेर आय हे। यहू मन जोड़ी वाला शब्द आयँ। फेर अइसन जोड़ी वाला शब्द मन ल 'पुनरुक्त शब्द' केहे जाथे। अइसन शब्द के परयोग अपन भाव ऊपर जोर दे खातिर अउ ओकर अर्थ ल पोठ बनाय बर करे जाथे।

   पाँच ठन पुनरुक्त शब्द सोंच के लिखव अउ अपन वाक्य म परयोग करव।

3. ये पाठ म 'नोहे' शब्द के प्रयोग करे गे हे। ये शब्द ह 'नइ' अउ 'हवय' के मेल ले बने हे। अइसने अउ शब्द हें– नइये (नइ + हे),थोकिन (थोर + किन)। अइसन शब्द मन मुँह ला सुख दे खातिर अउ समय ल बचाय बर अपने–अपन बनत रहिथें।

   ऊपर के उदाहरण असन पाँच शब्द खोज के लिखव अउ वाक्य बनावव।

योग्यता विस्तार

1. सुवागीत के जइसे छत्तीसगढ़ के अउ दूसर लोकगीत मन ल घलो सकेलव।

2. डंडा–नृत्य–गीत कब नाचे–गाये जाथे ? एकर बारे म अपन गाँव के सियान मन ले पूछव।

7JP19E

3. घर के सियान मन ले पूछ के अउ सुवागीत अपन कापी म लिखव अउ सकेलव।

4. सुवागीत के तर्ज म एक ठन गीत बनावव अउ गावव।

●●●

7JXHB2

पाठ 22

सुब्रह्मण्य भारती

– लेखकमंडल

देश के स्वाधीनता संग्राम में जहाँ कुछ देशभक्तों ने अपने तेजस्वी भाषणों, नारों से विदेशी सत्ता का दिल दहलाया, वहीं कुछ ऐसे साहित्यकार भी थे जिन्होंने अपने काव्य–बाणों से विपक्षी को आहत किया। हिंदी में यदि 'मैथिलीशरण गुप्त', 'सोहनलाल द्विवेदी', 'सुभद्राकुमारी चौहान', 'रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि ने अपनी काव्य–रचनाओं से भारतीय नवयुवकों के मन में देश–प्रेम के भाव भरे तो देश की अन्य भाषाओं में भी ऐसे देशभक्त कवि, साहित्यकार हुए जिनकी रचनाओं ने अँग्रेजी राज्य की जड़ें हिला दीं। तमिल भाषा के ऐसे ही कवि थे 'सुब्रह्मण्य भारती'। उनके संबंध में विस्तृत जानकारी इस पाठ में पढ़िए।

सुब्रह्मण्य भारती बीसवीं सदी के महान तमिल कवि थे। उनका नाम भारत के आधुनिक इतिहास में एक उत्कट देशभक्त के रूप में लिया जाता है। देश के स्वतंत्रता–संग्राम के लिए उन्होंने जिस शस्त्र का प्रयोग किया, वह था उनका लेखन, विशेषतया कविता। उनकी कविताओं ने तमिलवासियों को जाग्रत कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

सुब्रह्मण्य भारती का जन्म तमिलनाडु में एक मध्यवर्गीय परिवार में 11 दिसंबर, सन् 1882 को हुआ था। उनके पिता का नाम चिन्नास्वामी अय्यर और माँ का नाम लक्ष्मी अम्माल था। बचपन में भारती को सुब्बैया कहकर पुकारा जाता था। बचपन से ही वे कविताएँ लिखने और उनका पाठ करने के बहुत शौकीन थे। एट्टयपुरम् के राजा ने ग्यारह वर्षीय सुब्बैया को दरबार में कविता पाठ करने के लिए आमंत्रित किया। राजा के दरबार में एकत्र हुए विख्यात कवि उनका कविता पाठ सुनकर दंग रह गए। उन्होंने उन्हें 'भारती' की उपाधि से सुशोभित किया। इस तरह वे 'सुब्रह्मण्य भारती' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

जब सुब्बैया चौदह वर्ष के थे तभी उनका विवाह हो गया था। उनकी पत्नी चेल्लम्माल उस समय सात वर्ष की थीं। कुछ दिनों बाद सुब्बैया के माता–पिता का स्वर्गवास हो गया। सन् 1898 में भारती आगे पढ़ने के लिए वाराणसी (बनारस), अपनी काकी के पास, चले गए। बनारस में उन्होंने हिंदी, अँग्रेजी और संस्कृत भाषाएँ सीखीं।

बनारस में रहते हुए भारती के व्यक्तित्व में बहुत परिवर्तन आया। उन्होंने बड़ी–बड़ी पैनी मूँछें रख लीं। वे सिर पर पगड़ी पहनने लगे। उनकी विचारधारा में भी महान परिवर्तन आया। उनके हृदय में उग्र राष्ट्रीयता के बीज के कारण, उन्हें ब्रिटिश राज के बंधन में बँधे भारतीयों का दुःख व उनकी पीड़ा महसूस होने लगी।

अपने साथ देश–प्रेम की भावना सुलगाए, देशभक्त कवि भारती चार वर्ष बाद बनारस से घर लौटे। जीविका के लिए वे चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) में प्रसिद्ध तमिल दैनिक 'स्वदेशमित्रन्' में सहायक संपादक की हैसियत से नौकरी करने लगे, जिसके संस्थापक थे महान नेता जी.सुब्रह्मण्य अय्यर। अपने गीतों के माध्यम से भारतीय लोगों के हृदयों में राष्ट्रीयता की भावना जगाने लगे। जंगल की आग की तरह फैलते–फैलते ये गीत, शीघ्र ही राज्य के अधिकतम व्यक्तियों के हृदय तक पहुँच गए।

सन् 1907 में भारती ने सूरत में काँग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया। उग्रवादी विचारों से प्रभावित होने के कारण, उन्हें यह विश्वास हो गया था कि नरमपंथी दृष्टिकोण से देश कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकता। उनके मन में बाल गंगाधर तिलक और विपिन चन्द्र पाल के प्रति बहुत सम्मान उत्पन्न हो गया। वे लोग क्रांतिकारियों की तरह भारत की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने को तत्पर थे। उन्हें लगा कि स्थिति क्रांतिकारी मोड़ लेना चाहती है।

भारती का देशभक्तिपूर्ण लेखन बहुत शक्तिशाली होता जा रहा था, फिर भी कोई उसे छापने को तैयार नहीं था। लोग सरकार के क्रोध से डरते थे। यहाँ तक कि 'स्वदेशमित्रन्' के संपादक ने भी उनके दृढ़, उग्रवादी विचारों को छापने से इंकार कर दिया। इसलिए भारती ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और सन् 1907 में वे अपना ही 'इंडिया' नामक एक साप्ताहिक निकालने लगे। इसमें वे अपने विचारों को स्वतंत्रता से छापते और जनता उत्सुकता से उन्हें पढ़ती।

ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आंदोलन भड़कता जा रहा था। शासकों ने इसे दबाने के लिए नेताओं और आंदोलनकर्त्ताओं को पकड़ना और जेल में बंद करना शुरू कर दिया। भारती किसी भी दिन अपनी गिरफ्तारी के वारंट का इंतजार कर रहे थे। उनके दोस्त और अनुयायी नहीं चाहते थे कि वे सींखचों के पीछे बंद हों इसलिए गिरफ्तारी से बचने के लिए, भारती सन् 1908 में पाण्डिचेरी चले गए। वहाँ भी ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर, उनकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखे हुए थे। भारती को उन गुप्तचरों का पता लग गया था।

अपने दुखपूर्ण क्षणों में भी भारती का ईश्वरीय शक्ति पर से विश्वास नहीं हटा। इससे उन्हें पाण्डिचेरी में सबसे कठिन समय बिताने में सहायता मिली। जब उनके पास धन नहीं था, उनके प्रशंसकों ने आर्थिक रूप से और अन्य तरीकों से उनकी मदद की। यहाँ तक कि मकान का किराया न देने पर भी उनके मकान–मालिक ने उन्हें कुछ नहीं कहा।

भारती स्वयं किसी से सहायता नहीं माँगते थे। सहायता माँगने से उनके स्वाभिमान को ठेस लगती थी, किंतु गरीबी उनकी उदारता को कम नहीं कर पाई थी। एक बार उन्होंने अपना बहुमूल्य जरी के बॉर्डरवाला अंगवस्त्र तक, जिसे किसी अमीर प्रशंसक ने उन्हें दिया था, एक गरीब को दे दिया था। जब चेल्लम्माल ने इस बात के लिए उन्हें डाँटा तो वे हँस दिए और बोले कि उस गरीब आदमी पर वह अच्छा लग रहा था।

दूसरों की खुशी उनकी अपनी खुशी थी। वे अपने लेखन में अक्सर यह बात व्यक्त करते थे कि समस्त जीवित प्राणी उस सर्वोच्च शक्ति की अनुपम रचना हैं और उसकी नजर में हम सब बराबर हैं।

ऐसा लगता था कि जंगली जानवर भी भारती के सच्चे प्यार को पहचानते थे। एक बार, जब भारती और चेल्लम्माल चिड़ियाघर में घूम रहे थे, वे शेर के पिंजरे के बहुत करीब चले गए और जंगल के राजा को बुलाकर उससे बोले कि कविता का राजा तुमसे मिलने आया है। जवाब में शेर दहाड़ा और उसने भारती को अपना स्पर्श करने दिया। इस आश्चर्यजनक दृश्य को देखकर अन्य दर्शक भौंचक्के रह गए।

भारती को बच्चों से बहुत प्यार था। उन्होंने बच्चों के लिए 'द चाइल्ड साँग' (बच्चे का गीत) लिखा, उसे धुन दी और गाया भी।

भागो और खेलो, भागो और खेलो,
आलसी मत बनो, मेरे प्यारे बच्चो,
मिलजुलकर खेलो, मिलजुलकर खेलो,
कभी भी घबराओ नहीं, मेरे प्यारे बच्चो।
यही जीवन का ढंग है, मेरे प्यारे बच्चो।

भारती ने स्वतंत्र भारत के ऐसे लोगों की कल्पना की थी जो उच्च विचारों को आत्मसात कर उन्हें बढ़ावा दें। वे सहज ही पिछड़ी जाति के हिंदुओं और मुसलमानों से हिलमिल जाते थे।

अब तक गांधी–जी का सार्वभौमिक प्रेम व भाईचारे का संदेश देशभर में चारों ओर फैलने लगा था। उससे प्रभावित होकर भारती ने लिखा –

"रे मेरे मन ! मधुर
दया दिखा शत्रु पर"

उनका विजयनाद का गीत, जिस पर नृत्य भी किया जाता है, कहता है.....

"मानव–मानव एक समान
एक जाति की हम संतान
यही दृष्टि है खुशी आज की
बजा नगाड़ा, करो घोषणा प्रेम–राज्य की।"

भारती ने गांधी–जी की प्रशंसा में कविता लिखी,'बहुत वर्षों तक जीओ, गांधी महात्मा...'

भारती गांधी–जी से चेन्नई (मद्रास) में सन् 1919 में केवल एक बार मिले थे और वह भी कुछ क्षणों के लिए। गांधी–जी ने राजा–जी और अन्य काँग्रेसी नेताओं और देशभक्तों से कहा था, "भारती देश का एक ऐसा रत्न है जिसकी सुरक्षा और संरक्षण करना चाहिए।"

लेकिन बहुत जल्दी ही उनका अन्त आ गया। भारती नियमित रूप से मंदिर जाते थे। वहाँ मंदिर के हाथी को नारियल देने में उन्होंने कभी भी चूक नहीं की। एक दिन हाथी मस्ती में था। इस बात से अनभिज्ञ भारती हमेशा की तरह नारियल खिलाने उसके करीब गए। हाथी ने उनके अपनी विशाल सूँड़ मारी और वे एक उखड़े हुए पेड़ की तरह गिर गए। वे बुरी तरह घायल हो गए। भीड़ जमा हो गई और उन्हें देखने लगी, पर कोई भी पास जाकर उन्हें बचाने की हिम्मत न जुटा पाया। यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। जैसे ही यह खबर भारती के घनिष्ठ मित्र कानन के कानों तक पहुँची, वे भागे हुए आए और उन्होंने भारती को बचाया।

अच्छी चिकित्सा होने के कारण भारती की हालत कुछ हद तक सुधर गई। वे मन से अपने आपको स्वस्थ मानते थे और इसलिए यह विश्वास करने से इंकार करते थे कि उनकी सेहत गिर रही है। वे तब तक अपने क्षीण स्वर में गाते रहे, जब तक कि 12 सितंबर, सन् 1921 को उनकी आवाज़ सदा के लिए शांत न हो गई।

जब भारत स्वतंत्र हुआ तब भारती की रचनाएँ विस्तृत रूप से प्रकाशित होने लगीं। आज विश्व के पुस्तकालयों में उनकी किताबें संगृहीत हैं। अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होने के साथ–साथ अँग्रेजी, रूसी और फ्रेंच भाषा में भी उनकी पुस्तकों का अनुवाद हुआ है।

सुब्रह्मण्य भारती की याद में एट्टयपुरम् में 'भारती मंडप' स्थापित किया गया है। यहाँ, तमिल में महात्मा गांधी द्वारा लिखे शब्दों को पढ़ा जा सकता है, "जिन्होंने भारती को अमर बनाया, उन प्रयासों को मेरा आशीर्वाद।"

चेन्नई के समुद्रतट पर भारती की एक प्रतिमा है। ऐसा प्रतीत होता है कि अनंत लहरों का लयबद्ध नाद, उनकी कविताओं को गुनगुना रहा है।

भारती द्वारा रचित उनका आखिरी गीत, जो उन्होंने चेन्नई (मद्रास) के समुद्रतट पर हुई सभा में अपनी मृत्यु से कुछ सप्ताह पहले गाया था, उनके बहुत लोकप्रिय गीतों में से एक है–

"भारतीय समुदाय अमर हो
जय हो भारत–जन की जय हो।
भारत–जनता की जय–जय हो।
जय हो, जय हो, जय हो।"

टिप्पणी

तमिलनाडु = दक्षिण भारत का एक राज्य। इसकी राजधानी चेन्नई है। यहाँ की राजभाषा 'तमिल' है।

बाल गंगाधर तिलक = काँग्रेस में उग्र पंथ के नेता। इन्होंने ही यह नारा दिया था –"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।''

विपिनचन्द्र पाल = लोकमान्य तिलक के सहयोगी, बंगाल में काँग्रेस के सर्वमान्य नेता।

पाण्डिचेरी = भारत के पूर्वी तट पर फ्रांस का उपनिवेश था। अब केन्द्र शासित राज्य है। यहाँ पोरोविल पर्वत पर महर्षि अरविन्द का आश्रम विश्वविख्यात है।

राजा जी = चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य। स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल।

अभ्यास

पाठ से

1. सुब्बैया का नाम भारती कब और क्यों पड़ा ?
2. बनारस में रहते हुए सुब्बैया के व्यक्तित्व में क्या परिवर्तन आया ?
3. भारती स्वयं का साप्ताहिक अखबार क्यों निकालने लगे ?
4. भारती अपने लेखन में अक्सर किस बात को व्यक्त करने पर जोर दिया करते थे ?
5. महात्मा गाँधी ने भारती जी के बारे में क्या कहा था ?
6. भारती ने स्वतंत्र भारत में कैसे लोगों की कल्पना की थी ?
7. हाथी के हमले के समय भारती को क्यों कोई बचा नहीं पाया ?

पाठ से आगे

1. तमिलनाडु के रहनेवाले भारती जी जब बनारस में पढ़ने के लिए आए तो उन्होंने तमिल के साथ–साथ हिंदी और अंग्रेजी भाषाएँ भी सीखीं। आप सोचकर लिखिए कि इन भाषाओं के सीखने से भारती जी को कौन–कौन से लाभ हुए होंगे।
2. आप पाठ में देखते हैं कि भारती जी दूसरों तक अपने विचारों को पहुँचाने के लिए कविता, साप्ताहिक पत्र आदि का सहारा लेते हैं। आप अपनी बातों को दूसरे तक पहुँचने के लिए किन–किन साधनों का उपयोग करना चाहेंगे ?

7K7SCP

3. पाठ में बार–बार समाचार पत्रों का उल्लेख हुआ है। आप किन–किन समाचार पत्रों के बारे में जानते हैं और उनके पढने से आप को क्या लाभ होता है ? साथियों से चर्चा कर लिखिए।
4. भारती ने बच्चों के लिए गीत "चाइल्ड साँग लिखा और गाया। जिसमें भागो और खेलो आलसी मत बनो, मिल–जुलकर खेलो कभी घबराओ नहीं यही जीवन का ढंग है ! इन पंक्तियों में से देखें तो बच्चे क्या–क्या करते हैं और क्यों ?

भाषा से

1. पाठ में इन शब्दों का प्रयोग हुआ है– माता–पिता, समुद्रतट, पुस्तकालय, बहुमूल्य, स्वर्गवास जो सामासिक शब्द कहे जाते हैं, अर्थात दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। जैसे –'पुस्तक का घर' इसे हम 'पुस्तक का आलय या घर' भी कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि

'समास वह क्रिया है, जिसके द्वारा कम–से–कम शब्दों मे अधिक–से– अधिक अर्थ प्रकट किया जाता है।

समास के छ रूप देखने को प्रायः मिलते हैं –

1. तत्पुरुष समास, 2. कर्मधारय समास, 3. अव्ययीभाव समास, 4. द्वंद्व समास, 5. बहुव्रीहि समास, 6. द्विगु समास।

तत्पुरुष समास :– पुस्तकालय– पुस्तक का आलय, समुद्रतट–समुद्र का तट तत्पुरुष समास के उदाहरण हैं। इस समास का दूसरा पद अर्थात् उत्तर पद प्रधान होता है अर्थात् विभक्ति का लिंग, वचन दूसरे पद के अनुसार होता है इसका विग्रह करने पर कर्ता व सम्बोधन की विभक्तियों(ने,हे,ओ,अरे) के अतिरिक्त किसी भी कारक की विभक्त प्रयुक्त होती है। जैसे– सेनापति –सेना **का** स्वामी, शरणागत शरण **में** आया हुआ, सत्याग्रह –सत्य **के लिए** आग्रह, जलज – जल **में** जन्मा हुआ।

कर्मधारय समास– बहुमूल्य, स्वर्गवास, सज्जन, दहीबड़ा कर्मधारय समास के उदाहरण हैं। जिस समास का उत्तरपद प्रधान हो और पूर्वपद तथा उत्तरपद में विशेषण–विशेष्य अथवा उपमान–उपमेय का संबंध हो वह कर्मधारय समास कहलाता है। जैसे– कमलचरण– कमल **जैसा** चरण, महाराजा – महान **है जो** राजा, महादेव–महान **है जो** देव, विद्याधन– विद्या **रूपी** धन।

द्वंद्व समास–दोनों पद प्रधान होते है। दोनों पद प्रायः एक दूसरे के विलोम होते है, पर सदैव नहीं। इसका विग्रह करने पर और अथवा या का प्रयोग होता है । जैसे माता पिता– (माता **और** पिता) लोटा–डोरी– (लोटा **और** डोरी) पुस्तक से इन प्रकार के समास के उदाहरण को खोज कर लिखिए।

2. नीचे लिखे शब्दों में से जो अव्यय शब्द न हों उन्हें चिह्नित कर लिखिए–
   - अरे, वाह, जूता, और, तथा, शेर, शायरी
   - किन्तु, लड़का, परन्तु, कार्य, बल्कि, धीरे–धीर
   - कन्या, इसलिए, अतः एवं, पत्र, शब्द, अतएव
   - सीख, सोना, अवश्य, यदि, वाह, अर्थात, व, आदि
3. एक ही अर्थ को प्रकट करनेवाले शब्द को समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। बॉक्स में कुछ शब्द और उनके समानार्थी दिए गए हैं उनकी सही जोड़ी बनाइए–

स्वतंत्र, समुद्र, निलय, मनुष्य, भारती, वाराणसी, सरस्वती, जगत, वसुधा, निर्बल, आजाद, सागर, क्षीण, धरती, भव, बनारस, मानव, गृह।

योग्यता विस्तार

1. 'वन्दे मातरम्' और 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' भारत के प्रसिद्ध देश–भक्ति के गीत हैं। इन गीतों को खोजकर याद कीजिए और इनके रचनाकारों के सम्बन्ध में जानकारी लीजिए।

2. भारती जी ने साहित्य–रचना के माध्यम से स्वतंत्रता–आन्दोलन में सक्रिय सहयोग दिया। हिन्दी साहित्यकारों ने भी अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से यही कार्य किया। उन साहित्यकारों के नाम लिखिए और उनकी देश–प्रेम की कुछ रचनाएँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

●●●

सड़क सुरक्षा

"जीवन अनमोल है, सावधान रहें सुरक्षित रहें"

1. हमेशा सड़क की बायीं ओर चलें।
2. यदि किसी वाहन से आगे निकलना हो (Overtake) तो उसके दाहिने तरफ से निकलें।
3. जेब्रा क्रॉसिंग से ही सड़क पार करें।
4. छोटे बच्चे अपने बड़ों का हाथ पकड़कर सड़क पार करें।
5. सड़क पर चलते वक्त मोबाइल का इस्तेमाल न करें।
6. वाहन चलाते समय मोबाइल पर बात न करें।
7. नशे की हालत में वाहन न चलाएँ।
8. ट्रैफिक लाइट का पालन करें।
9. विद्यालय, अस्पताल, मंदिर आदि के पास धीमी गति से गाड़ी चलाएँ।
10. गाँव/शहर (रिहायशी बस्तियों से गुजरते समय गाड़ी की गति 20 कि.मी. प्रति घंटा रखे।
11. अंधे मोड़ पर गाड़ी की गति धीमी रखें एवं हार्न का इस्तेमाल करें।
12. सड़क किनारे लिखे निर्देशों का पालन करें।
13. 'दुर्घटना से देर भली' इस सूत्र वाक्य का स्वयं व परहित में अनिवार्य रूप से पालन करें।
14. हेलमेट एवं सीट बेल्ट का उपयोग करें।

यातायात नियमों का पालन अवश्य करें।

शब्दकोश

शब्दकोश में शब्दों का संयोजन तथा उनके अर्थ समझिए। रिक्त स्थानों पर, बॉक्स में दिए गए, पूर्व में पढ़े शब्द और उनके अर्थ, शब्द कोश के क्रम में लिखिए।

अ

अइहैं – आएँगे
अकर्मण्यता – निकम्मापन
अकिंचन – तुच्छ, छोटा
..... – .....
अक्षुण्य – बिना टूटे, अखण्डित
अगोचर – जो दिखाई न दे
..... – .....
अजैविक – जिनका सम्बन्ध जीवों से न हो
अट्टालिका – अटारी
अटूट – न टूटनेवाला, दृढ़, मजबूत
अंतिम घड़ियाँ – मृत्यु का आखिरी क्षण
अनश्वर – जो कभी नष्ट न हो, जिसका नाश न हो ।
अनर्गल – व्यर्थ, बेकार
अनभिज्ञ – जिसकी जानकारी न हो
..... – .....
अनिश्चय – निश्चय नहीं
अनुकरणीय – अपनाने योग्य
अनुराग – प्रेम
अनुपम – जिसको उपमा न दी जा सके, जिसकी समानता न हो
..... – .....
अपरिमित – जिसकी सीमा न हो
..... – .....
अभिमान – घमंड
..... – .....
अमराई – आम का बगीचा
अवधि – समय–सीमा
अवस्था – हालत
..... – .....
..... – .....
अश्रु – आँसू
असहनीय – जो सहन न किया जा सके
असामान्य – जो मामूली न हो, विशेष

अखिल, अजीव, अनाथ, अचल, अनूठी, अपूर्ण, अभाव, अभियान, अमिय, अविकल, अशिव

आ

..... – .....
आँखें भर आना – आँखों में आँसू आ जाना
आँजना – लगाना (काजल आदि)
आकर्षण – मन को अपनी ओर खींचनेवाला
आक्रमण – हमला
..... – .....
आगत – आया हुआ
आगमन – आना
..... – .....
..... – .....
आच्छादित – ढँकी हुई
आतंक – भय, उपद्रव
..... – .....
आतुरता – व्याकुलता, अकुलाहट
आदि – आरंभ, पहले
आदी – अभ्यस्त होना
आधीन – किसी के वश में होना
आध्यात्मिक – आत्मा– परमात्मा संबंधी
आभार – कृतज्ञता
आमंत्रित – बुलाया गया
आमोद – प्रसन्नता
आराध्य – पूज्य
आलिंगन – गले लगना, बाहों में भर लेना
आवेश – जोश
आयाम – फैलाव, विस्तार
आरोप – इलजाम, दोष लगाना
आर्थिक – धन से संबंधित
आशय – इच्छा रखना
आशीष – आशीर्वाद
आस्तीन – कमीज या कुर्ते की बाँह

आधार, अजीब, आतंकवाद, आग्रह, आघात, आँखें दिखाना, आकांक्षा

इ

इंदु – चंद्रमा
इंद्रप्रस्थ – महाभारत काल का एक प्रसिद्ध नगर जो दिल्ली के निकट था

इज्जत – सम्मान
इति – अंत
इत्यादि – वगैरह

ई

ईख – गन्ना
ईश – ईश्वर
ईर्ष्या – जलन
ईर्ष्यालु – जलन रखनेवाला

उ

उच्च – ऊँचा
उड़ा देना – खत्म कर देना
उत्सव – त्यौहार
..... – .....
..... – .....
उपरान्त – बाद में
उपलब्धियाँ – प्राप्तियाँ
उपासना – आराधना, पूजा–सेवा करना
..... – .....
उलाहना – अटकाव, झंझट
उलूक – उल्लू

उत्सुक, उन्नत, उभय

ऊ

ऊँघ – नींद का झोका
ऊटपटाँग – उल्टा–सीधा काम

ए,ऐ

एकत्रित – इकट्ठे
..... – .....
..... – .....
..... – .....
..... – .....

एकलव्य, एकमत, ऐश्वर्य, ऐक्य

ओ

ओत–प्रोत – भरा हुआ
..... – .....
..... – .....

ओष्ठ, ओसारा,

औ

..... – .....
..... – .....
औषधि – दवा

औषधालय, औद्योगिक

क

कंचन – सोना
..... – .....
कटि – कमर
कतार – पंक्ति
कदाचित – शायद
..... – .....
कमरिया – कम्बल
कर – हाथ, टैक्स
..... – .....
काक – कौआ
..... – .....
कान पकना – कोई बात सुनते–सुनते ऊब जाना
काफिला – यात्रियों का समूह
कारावास – जेल, कैदखाना, बंदीगृह
कालिंदी – जमुना/यमुना (नदी का नाम)
कालिमा – अँधेरे का कालापन
किंकर्त्तव्यविमूढ़ होना – क्या करें, क्या न करें, निश्चय न कर पाना
..... – .....
..... – .....
कुलीन – अच्छे परिवार का
कृति – रचना
केंद्रित करना – किसी एक बिंदु पर ध्यान एकाग्र करना
कोप – क्रोध
क्षत–विक्षत – बुरी तरह घायल,

किश्ती, कलरव, काजी, कीट, कगार, कदापि,

ख

..... – .....
..... – .....
खड्ग – तलवार

खतरे की घंटी – चेतावनी देना
खपत – उपयोग
..... – .....
खरामा–खरामा – धीरे–धीरे
खिताब – उपाधि
..... – .....
खिसक जाना – चुपके से चले जाना
..... – .....
खुसुर–फुसुर – बिना आवाज किए बातें करना
..... – .....
खेल बनाना – मजाक बनाना
..... – .....

खलल, खुदा, खग, खैर, खंजर, खर, खिन्न

ग

....
गतिरोध – बाधा
गला भर आना – भावुक हो जाना
ग्लानि – पछतावा, पश्चाताप
गिरि – पर्वत, पहाड़
....
गुप्तचर – जासूस
..... – .....
गूढ़ – रहस्यपूर्ण

ग्वारन – ग्वाले, गाय चरानेवाले

गंजा, गुंजाइश, गुबारा, गंध

घ

....
घटक – अंग
घट–घट – प्रत्येक हृदय में
घन – बादल
घनघोर – बहुत अधिक
घनेरी – बहुत अधिक
....
घाघ – भारी चालाक व्यक्ति
घाटी – दो पर्वतों के बीच का गहरा भू–भाग
..... – .....
..... – .....

घपला, घालमेल, घात, घंटिका

च

..... – .....
चक्का बँधा होना – स्थिर न रहना
चना–चबेना – सूखे, भुने खाद्य पदार्थ
....
चमन – उद्यान, बगीचा
चलायमान – गतिमान
....
चातुरी – चतुराई
....
चिरन्तन – पुराना, पुरातन
चीत्कार – दुखभरी, ऊँची आवाज
....
चुभन – चुभने का दर्द
....
चेष्टा – प्रयास
चैन – संतुष्टि, आराम
चैन आना – मन शान्त होना,

चपत, चहल–पहल, चुनौती, चेतना, चिर, चंद

छ

..... – .....
..... – .....
छटा – दृश्य, चमक
..... – .....
छिन्न–भिन्न होना – बिखर जाना
छींकौ – सींका
..... – .....
छुद्र – छोटी

छूँछी, छुआछूत, छग, छत्र, छंद

ज

..... – .....
जंजीर – बेड़ी
जगत – संसार, दुनियाँ
जन साधारण – साधारण जनता
जनानी – औरत, औरतों की
..... – .....

जमात – एक तरह के लोगों का समूह
..... – .....
जलचर – जल के जीव–जन्तु
जलवृष्टि – पानी गिरना, वर्षा होना,
जागरूक – सजग
जायो – पैदा किया
जिय – मन
..... – .....
जैविक – जीवों, प्राणियों से सम्बन्धित
..... – .....
जोर – दबाव, जबर्दस्ती
जोरो – जोड़कर
जोशांदा – सर्दी, जुखाम दूर करने की दवा
ज्वर – बुखार
..... – .....

जंजाल, जमघट, जयंती, जंग, जोखिम, जिहाद, ज्योतिष,

झ

..... – .....
..... – .....
..... – .....
..... – .....
झिड़की – डाँट, डपटना
झुटपुटा – सुबह जब कुछ उजाला, कुछ अँधेरा हो

झंकार, झिझक, झंझट, झाड़

ट

..... – .....
..... – .....
टहल – सेवा, चाकरी
..... – .....
..... – .....
टोटा – कभी
..... – .....

टालमटोल, टोह, टैक्सी, टंकण, टक्कर

ठ

..... – .....
..... – .....
..... – .....
..... – .....
ठिठक जाना – संकोचपूर्वक रुक जाना

ठिकाना, ठट्ठा, ठग, ठसक

ड

..... – .....
..... – .....
..... – .....
..... – .....
डोम – एक अनुसूचित जाति जो श्मशान में चिता जलाने का काम करती थी।

डंके की चोट कहना, डगर, डील–डौल, डंठल,

त

..... – .....
..... – .....
तत्काल – उसी समय, तुरंत
तृण – तिनका, घास
तंदुरुस्त – स्वस्थ
तृप्ति – संतुष्टि
तथाकथित – ऐसा कहा हुआ`
तत्परता – शीघ्रतापूर्वक
तन्मय – लीन
तन्मयता – लीन होना
तपस्या – कठिन साधना
तमाशा बनाना – हँसी का पात्र बनाना
तसल्ली देना – धैर्य बँधाना
ताप – गर्मी
तापित – तपा हुआ
..... – .....
ताल – तालाब
..... – .....
..... – .....
..... – .....

ताम्र, तिमिर, तंत्र, तुरंग, तीक्ष्ण, तंत्र–मंत्र

थ

थका–हारा – थकावट से चूर
..... – .....
..... – .....

थल, थर्राना

द

दंडसंहिता – सजा देनेवाले नियम
..... – .....
दरख्त – वृक्ष
दर–दर – द्वार–द्वार
दर्प – घमंड
..... – .....
दशक – दस वर्ष की अवधि
..... – .....
दामन – आँचल
दिलचस्पी – रुचि
दिलीप – रघुकुल के एक सम्राट
दीर्घ – लंबा समय
दीर्घजीवी – लंबे समय तक जीनेवाले
दीर्घायु – लंबी आयु
दुखद – दुख देनेवाला, कष्टप्रद
..... – .....
दुर्गन्ध – बदबू
दुर्गम – जहाँ जाना बहुत कठिन हो
..... – .....
दृष्टिपात – देखना
देशद्रोही – देश से द्रोह करनेवाला
..... – .....
..... – .....

दंत, दसमुख, दुर्गति, दृष्टि, द्युति, दबंग, दैत्य,

ध

..... – .....
..... – .....
धरातल – जमीन पर
..... – .....
धूर्त – कुटिल
धूर्तता – कुटिलता
..... – .....
धेनु – गाय
..... – .....

धीर, धंधा, धूमकेतु, धरा, ध्येय

न

नभ – आकाश
नभ–चुम्बी – बहुत ऊँचे, आकाश को चूमने वाला
नत होना – झुकना
..... – .....
नाती – लड़की का लड़का, लड़के का लड़का
नादान – नासमझ
..... – .....
निखार आना – अधिक सुंदर लगना
निरन्तर – लगातार
निराधार – आधारहीन
निर्जन – सुनसान
निर्बुद्धि – मूर्ख, बुद्धिहीन
निर्भर – आश्रित, अवलंबित
निर्वासन – निकालना (देश निकाला)
निश्चेष्ट – निष्क्रिय
निश्छल – छलरहित, बिना कपट के
निश्शंक – बिना किसी शंका के, निस्संदेह
..... – .....
निष्काम – बिना कामना के
निष्ठा – लगन
नीड़ – घोंसला
..... – .....
नीरोग – रोग रहित , बिना रोग के
नूपुर – घुँघरू (महिलाओं के पाँव का गहना)
..... – .....

नीरव, नृप, नर, नाभि, निष्कलंक

प

..... – .....
..... – .....
पखेरू – पक्षी
पतियायो – विश्वास कर लिया
परकाज – दूसरों के काम
परकोटा – मकान/बाड़ी/भूमि के चारों तरफ घिरा हुआ क्षेत्र, घेरा
परास्त – हार
परिवर्तित – बदला हुआ
पर्यटन – भ्रमण, घूमना

पाछे – पीछे
पाटलीपुत्र – वर्तमान पटना नगर
पाद–प्रक्षालन – चरण धोना
पाहन – पत्थर
..... – .....
पीड़ा – कष्ट, दुःख
पुरंदर – इंद्र
पुरातत्वविभाग – प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों, की देखरेख करनेवाला विभाग
पेशगी – अग्रिम राशि
पैशाचिक – राक्षस जैसा, क्रूर
..... – .....
पोता – पुत्र का पुत्र
प्रकांड – बहुत बड़ा, उत्तम
प्रखर – तेज
प्रच्छन्न – छुपा हुआ
प्रणयन – रचना, ग्रन्थ लिखना
प्रतिज्ञा – संकल्प, शपथ
प्रतिध्वनि – आवाज का वापस आना/ लौटकर गूंजना
प्रतिबद्ध – बँधा हुआ
प्रतिशोध – बदला
प्रतिष्ठा – सम्मान, इज्जत
प्रदूषित – जो दूषित हो गई हो
प्रफुल्लता – अति प्रसन्नता
प्रयत्न – कोशिश, प्रयास, उपाय
प्रवाहित – बहता हुआ
प्रशासनिक – शासकीय
प्राण पखेरू उड़ना– मृत्यु होना, मरना
प्रावधान – व्यवस्था
प्रेरणा – उकसाने की क्रिया
..... – .....

पंथ, पंकज, पिशाच, पोत, प्रोत्साहन

फ

..... – .....
..... – .....
फरार – लापता या, भागा हुआ व्यक्ति
..... – .....
फुरि – सांच, सच, सत्य
..... – .....

फक्कड़, फरियाद, फौज, फंदा

ब

..... – .....
बंदी छोर – बंधन खोलनेवाला
बख्श देना – क्षमा कर देना
बछल – वत्सल, गाय का बछड़े के प्रति जैसा प्रेम
बटोहिया – राहगीर
बतियाना – बातचीत करना
बरबस – जबर्दस्ती
बलवती – अधिक प्रबल
बलात – बलपूर्वक
बलिदान – कुर्बानी
बहियाँ – बाँह, भुजाएँ
बात की सँभार – वचन की रक्षा, बात को सँभाल के
बाध्य – विवश
बाला – युवती, बालिका
बावजूद – इसके होते हुए भी
बिनवै – विनती करता है
बियापे – अनुभव होता है
बुजुर्ग – वृद्ध, बूढ़े
..... – .....
..... – .....
बैन – वचन
बैजन्तीमाल – एक प्रकार की माला, जिसमें पाँच रंग के फूल होते हैं, विजयमाल
..... – .....

बुध, बैरागी, बुनियादी, बंदी

भ

..... – .....
भय – डर
भरमाकर – बहकाकर
..... – .....
भाँड़ा फूट जाना – रहस्य प्रगट हो जाना
भाँज दो – तेज कर दो
..... – .....

भाल – मस्तक
भाष्यकार – मूल ग्रंथ की व्याख्या लिखने वाला
..... – .....
भूत उतारना होगा – घमंड चूर करना होगा
भूमिगत – भूमि के अन्दर, जमीन के भीतर
..... – .....
भृकुटी – भौंह
भोटदेशी – भोट प्रदेश के रहने वाले,
भोर – सुबह
..... – .....

भव, भार, भंजक, भुजंग, भूलभुलैया, भौतिक

म

..... – .....
मंद – धीमा
मंदाग्नि – पाचन शक्ति का बिगड़ जाना,
मंदित – मढ़ा हुआ
मझारन – मध्य
मधुमेह – डायबिटीज नामक रोग, जिसमें पेशाब के साथ शक्कर भी आती है।
मधुवन – गोकुल के आसपास की भूमि, कृष्ण का रासलीला–स्थल
मनहर – मन को हरन करनेवाला, लुभाने वाला
मनीषी – ज्ञानी, पंडित
मनुजत्व – मानवता, आदमीयत
मनोकामना – मन की इच्छा
मनोरथ – मन की इच्छा
मनोरम – मन को अच्छा लगनेवाला, मन को रमानेवाला
मात देना – परास्त करना
मानुस – मनुष्य
मारक – मारनेवाला
माहिर – कुशल
मुकाबला – प्रतियोगिता, भिड़ंत
मुक्त – स्वतंत्र
मुखबिर – पुलिस को अपराधियों की सूचना देनेवाला
मुखर – अधिक बोलनेवाला
मुख्यतः – मुख्य रूप से
मुग्ध – मोहित होना
मुट्ठी में होना – वश में होना
मुठभेड़ – टक्कर
..... – .....
मेहतर – सफाई करनेवाला
मोर – मेरा, मयूर
मोहक – मन को मोह लेनेवाला
..... – .....
..... – .....

मोहताज, मूर्छा, मौन, मंजु

य

..... – .....
यंत्रणा – पीड़ा, क्लेश
..... – .....
याचक – भिखारी, माँगनेवाला
..... – .....
यातना – अतिकष्ट, पीड़ा
..... – .....
युक्ति – उपाय
योगाभ्यासी – योग का अभ्यास करनेवाला
..... – .....
न्यारा – अलग, भिन्न

यम, योग्य, यंत्र, यान, याचना

र

..... – .....
..... – .....
रकम – धन, पैसा
रघुवंश – महाकवि कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य, महाराज रघु की कथा
रफ्तार – गति
रसाल – आम
..... – .....
राजति – शोभायमान होते हैं
राष्ट्रीयता – राष्ट्र प्रेम की भावना
..... – .....
..... – .....
रिसाई – नाराज होना
रुँआँसी – रोने जैसे

राष्ट्र, रिक्त, राह, रंज, रंक

ल

लकुटि – लाठी, छड़ी
लखो – देखो
..... – .....
लामा – तिब्बत के बौद्ध भिक्षु, तिब्बती साधु
..... – .....
..... – .....
लिबास – वेश–भूषा
..... – .....
लेक – दर्रा
लैहों – लूँगी, पाऊँगी
..... – .....
..... – .....

लिखित, लीन, लोक, लवण, लायक, लोचन

व

वंदन – वंदना, वंदनवार
..... – .....
वाष्प इंजन – भाप से चलने वाला इंजन
विकल – व्याकुल
विकल्प – इसके बदले में
विख्यात – प्रसिद्ध, जाहिर
..... – .....
..... – .....
विद्यमान – उपस्थित, मोजूद
विधि – प्रकार, तरीके
..... – .....
विराटता – विशालता
विवश – लाचार, मजबूर
विस्मित – आश्चर्यचकित
विशेषज्ञ – विषय का जानकार
वैकल्पिक – इसके बदले में
वैदिक युग – जिस युग में वेदों की रचना की गई
वैजंतीमाल – एक प्रकार की माला जिसमें पाँच रंगो के फूल होते हैं। विजय माला
..... – .....
व्यर्थ – बेकार, फालतू
व्यस्त – किसी काम में लगा हुआ
व्यापक – जो सब जगह हैं
व्याप्त – फैली हुई, फैला हुआ, समाया हुआ

व्यंग्य, वियोग, विजयनाद, वाष्प, विगत

श

..... – .....
शंख – माप की इकाई, गणना की इकाई, एक समुद्री जीव का शरीर, जिसके मर जाने पर उसे पूजा आदि कार्य में बजाने के काम में लेते हैं
..... – .....
शतरंज – एक प्रकार का खेल
..... – .....
शरीरान्त – शरीर का अंत, मृत्यु, देहावसान
शारीरिक – शरीर संबंधी
..... – .....
शोभा – सौंदर्य
..... – .....
शौकीन – शौक करने वाला, किसी भी काम में अधिक रुचि रखने वाला।
श्मशान – मुर्दा जलाने का स्थान
..... – .....
श्रृंगार – साज, सज्जा
..... – .....
श्रेष्ठ – अच्छा

शौक, शैल, शंका, शत, शपथ, श्वेत, श्रेय,श्रोत

स

सँकरी – तंग, पतली
संकल्प – प्रण, प्रतिज्ञा
संकेत – इशारा
संग्रहीत – एकत्र की गई
संग्राम – युद्ध
..... – .....
संचालन – कार्यक्रम की प्रस्तुति

संजोग – सुअवसर
संसर्ग – साथ
संयंत्र – कारखाना
सकल – पूरा, सम्पूर्ण
सखी – सहेली
सचेत करना – चेतावनी देना
सतत् – हमेशा, लगातार
सत्कार – स्वागत
..... – .....
सदी – सौ वर्ष का समय
सदृश – के समान, उसके जैसे
सन्नाटा – खामोशी
सफर – यात्रा
समग्र – पूर्ण, पूरी
समर्पित – अर्पित करना, न्यौछावर करना
समाधि – शव को मिट्टी में गाड़ना
सम्मान – आदर
समुचित – सही तरीके से,
सरवर – तालाब, सरोवर
सर्वत्र – सब जगह
सर्वव्यापी – सब जगह रहनेवाला
सर्वाधिक – सबसे अधिक
सर्वोच्च – सबसे ऊँचा
सहचर – साथ चलनेवाला
सहभागिता – सहयोग, भागीदारी
सहमत होना – रजामंदी
सहृदयता – हृदय में दया करुणा का भाव
साँझ – सायंकाल
साँझ ढले – सूर्यास्त के बाद
सांत्वना – तसल्ली
..... – .....
साहब – स्वामी, प्रभु
साहस – हिम्मत
साहस छूट जाना – हिम्मत हारना
सिंह–पौर – सिंह की आकृतिवाला दरवाजा, महल का प्रवेश द्वार
सिर फुटव्वल – सिर फोड़ने जैसी भारी मारपीट
..... – .....
..... – .....
सुकुमार – कोमल
सुगीत – सुंदर गीत
..... – .....
सुर्राभ – सुगंधित वायु
सूक्ष्म – बहुत छोटा, कठिनाई से समझ में आने योग्य
सेहत – स्वास्थ्य
सैलानी – यात्री, घुमक्कड़, सैर करनेवाले
सौंदर्य – सुंदरता
सौर–ऊर्जा – सूर्य से प्राप्त होनेवाली शक्ति
स्निग्ध – चिकनाई युक्त
स्वर्गवास – मृत्यु, देहांत, स्वर्ग में रहना
स्वच्छंद – स्वतंत्र
स्वाँग रचना – भिन्न–भिन्न प्रकार के रूप बनाकर अभिनय करना।
स्मरण – याद
स्मरणशक्ति – याददास्त, याद रखने की शक्ति
स्नेह – प्रेम
स्नेहभाजन – प्रेमपात्र, प्रेम के हकदार

सिरहाने, सिर्फ, संघर्ष, सुभट, सार्थक, सदा

ह

..... – .....
हमार – हमारा
हरगिज – कभी भी
हल्ला मचना – शोर–शराबा होना
हाड़ी – बटलोही के आकार का मिट्टी का बर्तन
हाँसी – हँसी, ठिठोली
हाथ फैलाना – भीख माँगना, याचना करना
..... – .....
ह्रास – कम होना
हित – भलाई
हिम – बर्फ
हिमवृष्टि – बर्फ की वर्षा
..... – .....
..... – .....
हृदयग्राहिणी – हृदय में रखने योग्य
..... – .....
होणी – भविष्य में जो होना है
..... – .....

हुंकार, हास, होड़, हड़कंप, हेतु

ब्रेल एक परिचय

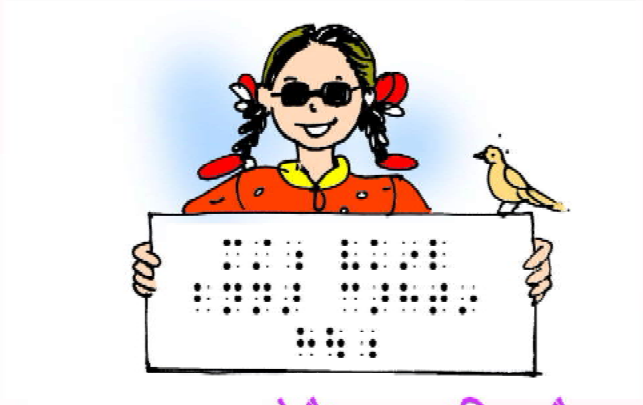

क्या आप जानते है यह क्या लिखा है

यह लिखा है –**मैं वकील बनना चाहती हूं।**

देवनागिरी, गुरूमुखी इत्यादि लिपियों की तरह ही ब्रेल भी एक लिपि है। ब्रेल लिपि का उपयोग दृष्टिहीन व्यक्तियों द्वारा पढ़ने एवं लिखने के लिये किया जाता है। ब्रेल लिपि का अविष्कार लुई ब्रेल द्वारा सन् 1829 में किया गया था। ब्रेल लिपि उभरे हुए छ: बिन्दुओं पर आधारित होती है, इन छ: बिन्दुओं से मिलकर एक सेल बनता है, प्रत्येक सेल में एक वर्ण (अक्षर) लिखा जाता है। ब्रेल लिखने के लिये स्टाइलस एवं विशेष प्रकार की स्लेट का उपयोग किया जाता है जिसमें छ:–छ: बिन्दुओं के कई सेल बने होते हैं इसे ब्रेल स्लेट कहा जाता है। ब्रेल स्टेल में मोटे कागज़ की शीट पर स्टाइलस के द्वारा लिखा जाता है। ब्रेल स्लेट की सहायता से ब्रेल लिपि में लिखते समय सीधे हाथ से उलटे हाथ की तरफलिखा जाता है जिससे की उभार दूसरी तरफ आते हैं। इन्ही उभारों को हाथ की उंगलियों की सहायता से छू कर पढ़ा जाता है। ब्रेल के छ: बिन्दुओं का क्रम इस प्रकार होता है।

① ④
② ⑤
③ ⑥
ब्रेल बिन्दु

इन छः बिन्दुओं को लेकर 63 अलग-अलग आकृतियां बनाई जा सकती है।
कुछ आकृतियां निम्न प्रकार हैं

ब्रेल चार्ट

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
अः	ऋ	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ
ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	ड़	ढ़				

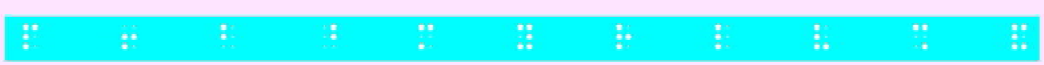

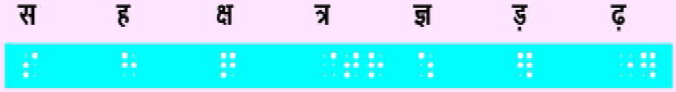

नोट : उभारे हुए बिन्दुओं को यहां मोटे बिन्दुओं के रूप में दिखाया गया है।

Copyright © 2008 ABUSH. All rights reserved.

यदि आपके घर में कोई श्रवणबाधित बच्चा हो तो-

- जैसे ही इस बात की शंका हो कि बच्चे को सुनने में कठिनाई है, कान बहना या दर्द है, तब तुरंत ही नाक, कान, गला विशेषज्ञ डाक्टर के पास जाएं तथा उपचार के विषय में चर्चा करें।
- कुछ मामलों में सुनने की समस्या का निराकरण सही समय पर दवाइयों के प्रयोग से तथा शल्य क्रिया की सहायता से किया जा सकता है।
- बहुत देर होने से कान की आंतरिक संरचना में क्षति पहुंचने से श्रवण दोष उत्पन्न हो सकता है।
- श्रवण दोष का पता चलते ही उसे विशेषज्ञ की सलाह से सही श्रवण यंत्र पहनाए।
- समय रहते बहरापन का पता लगाना अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि बच्चे के जीवन के आरंभिक वर्षों में उसका मस्तिष्क बहुत कोमल होता है वह भाषा बड़ी तेजी से सीखता है यदि बच्चे की सुनने की परेशानी को जल्दी न पहचाना जाए और उसकी समुचित सहायता न की जाए तो बच्चे की 0–7 वर्ष की अवस्था जो कि भाषा सीखने में बहुत ही महत्वपूर्ण होती है व्यर्थ चली जाती है। जितनी जल्दी विशिष्ट प्रशिक्षण आरम्भ होगा उतना ही भाषा को समझने व अपने आपको व्यक्त करने में वह सफल होगा।
- माता पिता अपने बच्चे को श्रवण यंत्र लगाकर विभिन्न आवाज़ों में भेद तथा पहचान करना सिखाएँ। विभिन्न आवाज़ों को पहचानने का प्रशिक्षण बहुत आवश्यक है।
- अलग–अलग आवाज़ें निकालकर बच्चों को उन्हें पहचानने के लिए प्रोत्साहित करें। उदाहरण के लिए जब कुत्ता भौंके अथवा बच्चा रोए तो साफ और ऊंचे स्वर में उससे कहें "कुत्ते की आवाज़ सुनो", "बच्चा रो रहा है" तथा अगली बार बच्चे से पूछें कि किसकी आवाज़ है और सही उत्तर देने पर उसे प्रोत्साहित करें।
- बच्चे से बात करते वक्त यह ध्यान रखें कि आपके मुंह में कुछ न हो जैसे पान, सुपारी आदि। बात करते वक्त धीरे व साफ बोलें जिससे वह आपके होंठों के संकेतों से भी बात समझने की कोशिश करेगा।
- एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि श्रवण यंत्र को श्रवणबाधित बच्चा लगातार पहना रहे। तभी वह आवाज़ों को पहचान/समझ पायेगा।
- इशारों का प्रयोग जहां तक संभव हो कम करें तथा बात को बोलकर ही समझाएं। इससे बच्चा होंठ पठन के माध्यम से समझने में सक्षम होगा और जीवन में कहीं भी लोगों की बातें समझ सकेगा तथा अपनी बात समझा सकेगा।

Copyright © 2008 ARUSHI. All rights re

क्या आप जानते हैं इकबाल आपसे क्या कह रहा है?

इकबाल आपसे कह रहा है मैं कक्षा में प्रथम आया!

सांकेतिक भाषाः सामान्य परिचय

सांकेतिक भाषा का उपयोग श्रवण बाधित व्यक्ति द्वारा संप्रेषण हेतु किया जाता है। वाक् के अभाव में श्रवण बाधित सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं। आमतौर पर लोगों की धारणा है कि सांकेतिक भाषा में व्याकरण का अभाव होता है परन्तु यह सही नहीं है, सांकेतिक भाषा में भी व्याकरण है। व्याकरण की दृष्टि से अमेरिकन सांकेतिक भाषा सबसे ज्यादा उन्नत है। अमेरिकन सांकेतिक भाषा फिंगर स्पेलिंग पर निर्भर है तथा वहां सिंगल हैण्डेड फिंगर स्पेलिंग का प्रयोग किया जाता है। इंडियन सांकेतिक भाषा में डबल हैंड़ेड फिंगर स्पेलिंग का प्रयोग किया जाता है। आइये अब हम डबल हैंड़ेड फिंगर स्पेलिंग जाने–